आरानागरी प्रचारिणी सभा द्वारा अनुमोदित

स्वर्गीय बाबू साहिबप्रसाद सिंह

की

जीवनी

अख्तियारपुर, ज़िला आरा निवासी

हरिश्चन्द्र चरित लेखक

बाबू शिवनन्दन सहाय

लिखित।

बांकीपुर

खड्गविलास प्रेस में छपकर प्रकाशित.

१९०७.

हरिश्चन्द्राब्द २४ | दाम
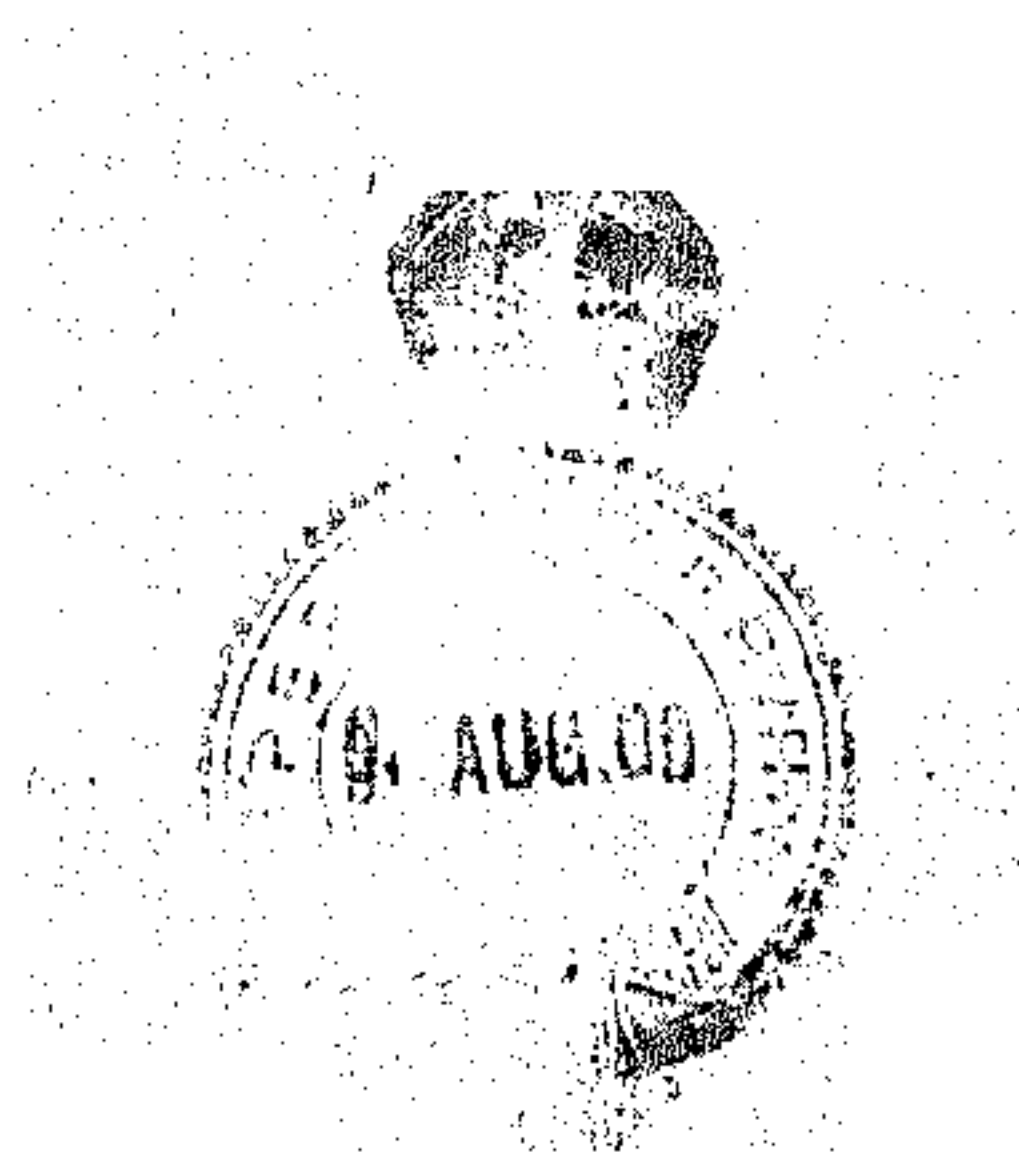
साहिबप्रसाद सिंह।
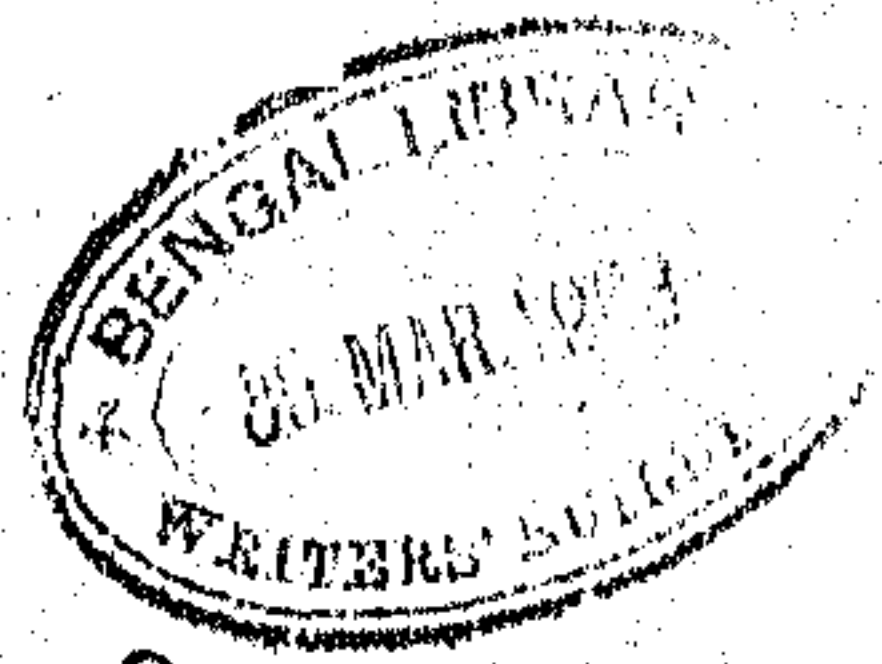
इस में सन्देह नहीं कि ईश्वर ही के अनुग्रह से एक साधारण मनुष्य भी संसार में सुख तथा सुख्याति लाभ करता है और उसी की असीम कृपा से कोई व्यक्ति यशस्वी, जगत्‌मान्य, जगत्‌प्रिय, तथा जगद्‌विजयी भी होता है। क्योंकि राई को पर्वतवत् गौरव प्रदान करनेवाला और अनहोनी को कर दिखानेवाला वही है यह बात सब ईश्वरवादी स्वीकार करेंगे।

"द्योस को रात करे जो चहै अरु रातहु को करि द्योस दिखावै।
त्यों पदमाकर सील को सिंधु पपीलका की पग फील फिरावै॥
यों समरत्थ तनयदसरत्थ को सोई करे जो कछू मन भावै।
चाहै सुमेर को राई करे रचि राई को चाहै सुमेर बनावै॥"

यह कवि की अति उक्ति नहीं कही जायगी। यह बात प्रत्यक्ष देखने में आती है। एक साधारण पुरुष का महत्त्व प्राप्त करना और एक का महती अवस्था से हीन दशा में आना यह नित्य की घटना है। किन्तु ये घटनाएं भी बिना हेतु नहीं होतीं। जो पुरुष परिश्रमी और उद्योगी होते हैं वेही उन्नति लाभ कर सकते हैं। और आलसी और निरुद्यमी पुरुषों को तो पाप अपना हथियार बनाकर उन्हीं के द्वारा कुत्सित कामों का साधन किया करता है।

"The satan finds every mischief,
For idle hands to do."

हिन्दी-साहित्य-वाटिका के रसिकगण, चाहे वे बड़े हों चाहे

छोटे, चाहे नगरों के सुख्यात पंडित हों चाहे ग्रामवासी केवल रामायण के प्रेमी हों, बांकीपुर खड्गविलास यंत्रालय के सुयोग्य कार्य्यकर्त्ता, हिन्दी के परमहितैषी और बा० रामदीन सिंह के एकमात्र कार्यसहायक बाबू साहिब प्रसाद सिंह का नाम कभी न कभी अवश्य सुने होंगे। बिहार प्रान्त के स्कूलों के तो छोटे २ बालक भी इन के नाम, इन के गुण एवं इन के रचे ग्रन्थों से परिचित थे और हैं। इस प्रबन्ध में उन्हीं का जीवन वृत्तान्त वर्णन किया जाता है।

साहिबप्रसाद सिंह तिर्हुत प्रदेशान्तर्गत ज़िला मुज़फ़्फ़रपुर परगना हाजीपुर रूपसबढ़ुआ ग्राम के रहनेवाले * पम्मारवंशीय क्षत्रिय थे। सं० १६११ में इन का जन्म हुआ था। इन के पिता का नाम शिवराम सिंह था जो बड़े सरल स्वभाव के मनुष्य थे और रामायण में विशेष प्रीति रखते थे। उन की बनाई हुई मानसचरित्र किष्किंधा कांड की टीका वर्तमान है। स्वयं पढ़े लिखे होने के कारण लड़कों की शिक्षा की ओर उन का विशेष ध्यान रहता था।

साहिब प्रसाद सिंह अपने सात भाइयों में से छठें थे। बाबू रामाधीन सिंह, बाबू छत्रधारी सिंह बाबू नब्बू सिंह तथा बाबू चण्डीप्रसाद सिंह इन से बड़े, और बाबू राममनोहर सिंह इन से छोटे थे। बाबू चण्डीप्रसाद सिंह से एक कनिष्ठ भ्राता का

---

* गंगातीरे त्रिहुतप्रान्ते रूपससमाधिग्रामे । शिवरामसिंहजीऽयं ख्यातो विद्याविलासग्रामे ॥ साहिबप्रसादसिंहः पुस्तकमेतद्विधाय लोकानाम् । उपकार-बुद्धितस्तन्मुद्रणयंत्रे सुमुद्रणं चक्रे ॥ गुरुगणितशतक, भूमिका।

स्वर्गवास नामकरण के पूर्व ही हो गया था। इन के सब भाइयों का शील स्वभाव प्रशंसायोग्य देखने में आया।

लिखने पढ़ने की ओर इन की रुचि बाल्यावस्था ही से थी। ग्यारह बारह वर्ष की अवस्था में जो कोई हिन्दी की छपी हुई पुस्तक देखते उसे क्रय कर के पढ़ने लगते। पंद्रह सोलह वर्ष के होने पर हिन्दी साहित्य में इन का चित्त प्रवृत्त हुआ और वय वृद्धि के साथ २ उस रुचि की भी वृद्धि होती गई। इन की शिक्षा यथा नियम नहीं हुई थी। ये कुछ दिन घर पर पढ़े थे, और कुछ दिन तारणपुर। तदनन्तर पटना आकर इन्हों ने कुछ काल तक विद्या का अध्ययन किया था। परन्तु इन की बुद्धि तीव्र थी और बालपन ही से ये सच्चरित्र भी थे। साहस आदि कई एक गुण जो मनुष्य की उन्नति के सहायक होते हैं आदि ही से इन में प्रलक्षित थे। उन्हीं गुणों के प्रभाव से ये आगे एक सुविज्ञ तथा कार्य्यदक्ष पुरुष हुए। लिखने पढ़ने के व्यसन तथा कार्य्यनिपुणता ही ने उत्तरोत्तर इन का नाम बढ़ाया और इन्हीं गुणों के कारण ये स्वर्गवासी हिन्दी के परमाधार महा-राजकुमार बाबू रामदीन सिंह की सुकीर्ति के सहायक हुए।

उक्त महाराज कुमार कैसे प्रसिद्ध हिन्दी हितैषी थे यह बात किसी पर अविदित नहीं है। इन के समान हिन्दीसेवक हिन्दीप्रचारक इस प्रान्त में अब तक कोई नहीं हुआ। आगे होगा वा नहीं, यह कहने का हमारा क्या किसीका सामर्थ्य नहीं। अन्य बातों के सिवाय इन का यही हिन्दीविषयक परमानुराग देख कर प्रचलित हिन्दीभाषा के जन्मदाता श्री भारतेन्दु बाबू

हरिश्चन्द्र ने स्वरचित सब पुस्तकों का स्वत्व इन्हें प्रदान कर के हिन्दी के उद्धार का भार इन को समर्पण किया था। महाराज कुमार बाबू रामदीन सिंह की सुख्याति का मूल कारण आप का निज उद्योग तो थाही इस में कुछ सन्देह नहीं, परन्तु साथ ही साथ इन के सहायक लोग भी इस सुख्याति के विशेष कारण हुए। यह भी ईश्वर की विचित्र लीला है कि जिस व्यक्ति को संसार में जिस मार्ग पर ले जाना चाहता है उसे वैसा ही सहायक भी प्रस्तुत कर देता है। इन के सहायकों में महाराजकुमार लाल खड्गबहादुर मल्ल, बाबू साहब प्रसाद सिंह, पं० प्रतापनारायण मिश्र, जी० ए० ग्रियर्सन साहब तथा पं० दामोदर शास्त्री आदि मुख्य सहायक कहे जायंगे। वरन इन लोगों की सहायता न मिलती तो बाबू रामदीन सिंह जैसे परिश्रमी, उद्योगी एवं चतुरचूड़ामणि के लिए भी ऐसी सुख्याति की प्राप्ति दुर्लभ होती यह कहना कुछ अयोग्य न होगा। साहिबप्रसाद सिंह का विवरण लिखने के पूर्व हम दो पूर्वोक्त महाशयों का संक्षिप्त वृत्तान्त यहां पर लिख देना अनुचित नहीं समझते हैं। प्रायः सभी हिन्दी-भाषा-रसिक ग्रियर्सन साहिब बहादुर का नाम जानते होंगे। परन्तु पं० अम्बिकादत्त व्यास कृत "बिहारीबिहार", और " सरस्वती " नाम्नी मासिकपत्रिका के पाठकों के अतिरिक्त इन का वृत्तान्त कम लोगों को ज्ञात होगा। आयरलैंड के डबलिन प्रगना में ७वीं जनवरी १८५७ में इन का जन्म हुआ। इन के पिता "रायफ़र्नहम" घराने के जार्ज एब्रहम ग्रियर्सन एल० एल० डी० बैरिस्टर थे। कुछ काल अन्य

स्थानों में पढ़कर १७ वर्ष की अवस्था में जी० ए० ग्रियर्सन साहिब ने "डब्लिन ट्रिनीटी कालिज" में प्रवेश किया। वहां गणित परीक्षा में इन्होंने बड़ी प्रतिष्ठा पाई। पुनः प्रोफ़ेसर राबर्ट ऐटकिन्सन से इन्होंने संस्कृत सीख कर फिर "संस्कृत एक्जिबिशन" नामक पारितोषिक प्राप्त किया और हिन्दुस्तानी भाषा का भी पुरस्कार पाया। पूर्वोक्त प्रोफ़ेसर ही के प्रसाद से हमारे देश की भाषा में इन का अटल प्रेम जन्मा।

सिविल सर्विस परीक्षा पास करके १८७३ ई० में ये जशोर में असिस्टंट मजिस्ट्रेट हुए। किन्तु बिहार में भारी दुर्भिक्ष होने के कारण उस के प्रबन्धार्थ ये तिरहुत प्रदेश में भेजे गये।

फिर हवड़ा, मुर्शिदाबाद और रंगपुर में रहे। रंगपुर की भाषा का इन्होंने एक व्याकरण बनाया। इसी मध्य में इन्होंने बंगभाषा और संस्कृत में "उच्च पाण्डित्य" (High Proficiency) की परीक्षा पास की और "बंगाल एशियाटिक सोसाइटी में" भी सम्मिलित हुए।

१८७७ ई० से तीन वर्ष प्रर्यन्त दर्भङ्गा के सब डिवीज़न मधुबनी में सबडिवीज़नल आफ़िसर रहे। उसी समय पं० चन्दन झा, भाना झा, हली झा प्रभृति के साहाय्य से एवं अपनी अलौकिक बुद्धि के बल से इन्होंने तिरहुत भाषा का व्याकरण बनाया। और फिर बिहारी भाषा की भोजपुरी मगधी आदि साधारण बोलियों के सात व्याकरणों की रचना की। इन्होंने बिहार के किसानों के रहन सहन का "बिहारपिजेंट लाइफ़" नामक ग्रन्थ भी लिखा। १८८० ई० में डबलिन जाकर इन्होंने डा० मारिस कालिस साहिब की बेटी से अपना विवाह

किया। भारतवर्ष में लौट आने पर सरकार ने "कैथी टाइप" ढलवाने का काम इन को सौंपा।

१८८१ ई० में ये पटना में ज्वाइंट मजिस्ट्रेट हुए। इसी अवसर में इन को बिहार के इस प्रांत के लोगों से परिचय हुआ। तब ये, बंगला एशियाटिक सोसाइटी, रायल एशियाटिक सोसाइटी और जर्मन ओरियंटल सोसाइटी के पत्रों में लेख लिखने लगे। इन्होंने भारतवर्षीय साहित्य की अनोखी बातें (Curiosities of Indian Literature) एवं विद्यापति और उन के समकालीन (Vidyapati and his contemporaries) आदि प्रबन्ध प्रकाश किया। १८८६ ई० में आस्ट्रिया की वाएना नगर के "कांग्रेस आव दी ओरियंटलिस्ट" (पूर्वी विद्वानों की सभा) में जो इन्होंने एक लेख पढ़ा था उसी को पीछे "The Modern Vernacular Literature of Hindustan ,, के नाम से प्रकाशित कराया।

फिर ये गया तथा आरा में भी मजिस्ट्रेट रहे। अन्त में बांकीपुर में अफ़ीम के एजेंट हुए। आजकल स्वदेश में आनंद कर रहे हैं। परन्तु जहां रहे वहां कुछ करते ही रहे और जहां हैं वहां भी कर ही रहे हैं। नेत्ररोग से पीड़ित रहने पर भी इन्होंने काश्मीरी भाषा का काश्मीरशब्दामृत नामक व्याकरण प्रकाश किया। इन के ग्रंथ तो अनेक हैं पर सब से बड़ा और सब के पीछे बननेवाली पुस्तक भारतीयभाषा के सर्वे संबंधी है जो छपकर अभी तक पूरी नहीं हुई है। पांच जिल्द निकल चुकी है।

बंगला आदि कई एक भाषा जानने पर भी हिन्दी पर इन

का अधिक प्रेम है। उस में भी ठेंठहिन्दी से तो और भी अधिक स्नेह है। गोस्वामी तुलसीदास जी की रचना के ये अत्यन्त प्रेमी हैं। इन्हीं ने एक उत्तम भूमिका और नोट के साथ लालचन्द्रिका को भी प्रकाशित किया है। हिन्दीभाषा पर सदा स्नेह रखकर इन्हीं ने इस का बड़ा उपकार किया है। इस भाषा की ओर विलायतवालों का मन फेरनेवाले यही हुए। हिन्दी भाषा के प्रेमी इन के बहुत ही ऋणी हैं।

१८८१ ई० में बांकीपुर में जब ये ज्वाइंट मजिस्ट्रेट हो कर आये थे उसी समय पटना गवर्नमेंट कालिज के संस्कृत प्रोफेसर पं० छोटूरामतिवारी के द्वारा बाबू रामदीन सिंह तथा साहिब-प्रसाद सिंह का इन से परिचय हुआ और तभी से इन लोगों पर सदैव इन की कृपादृष्टि रही और आज भी इस यंत्रालय के स्वामी पर ये वैसीही दया दरसाते हैं।

अब पं० प्रतापनारायण मिश्र का भी थोड़ा परिचय लीजिए यह कात्यायन कुलोद्भूत कान्यकुब्ज ब्राह्मण पं० संकटादीन के पुत्र थे। अवध प्रदेश के बैजागांव ज़िला उनांव में इन का मकान था। आश्विनकृष्ण नवमी सं० १९१३ में इन का जन्म हुआ। बाल्या-वस्थाही से ये पिता के संग कानपुर रहने लगे। पढ़ने में ये मन नहीं देते थे। इस से इन के पिताजी ने इन्हें स्कूल में बैठा दिया। किन्तु इस का फल भी अच्छा नहीं हुआ। ये और कुछ नहीं करते बराबर केवल "कवि-वचन-सुधा" पत्र पढ़ा करते थे। इस से हिन्दी में कुछ गद्य पद्य लिखने का इन्हें अभ्यास हो गया। फिर तो आपही पढ़ने के लिए मन उभड़ा। इन्हों ने संस्कृत फ़ारसी अर्बी बंगला सब कुछ सीखा और पढ़ा। तब ये एक प्रसिद्ध

पंडित, सुलेखक, देशहितैषी, भाषाहितैषी हुए। इन के हृदय का भाव इसी कविता से प्रकाशित होता है:—

छप्पै—जब लगि तजि सब संक सकुच अरु आस पराई। नहिं करिहो अपने हाथन आपनी भलाई॥ जब लगि आपन भाषा भेष भाव भोजन कहँ। सब सों बढ़कर नहि उत्तम जानि हो जगत महँ॥ तब लगि उपाव कोटिन करत अगिनित जन्म बिताइहो। पै सांचो सुख सम्पति कबहुं सपने हुं नहिं पाइ हो।"

इन की लेखप्रणाली भारतेन्दु की शैली की थी। ये ब्राह्मण नामक एक अपना मासिकपत्र निकालते थे और कुछ काल तक हिन्दीदैनिक पत्र हिन्दुस्तान को सम्पादित करते थे। इन की बनाई हुई वा बंगभाषा से अनुवादित अनेक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। शकुंतला का छन्दबद्ध अनुवाद इन्हीं का किया हुआ है।

इन्हों ने "विक्टरप्रिंस" और "ब्रेडलास्वागत" हिन्दी काव्य में लिखा है। "ब्रेडला स्वागत" का अंग्रेज़ी अनुवाद कर के पिनकाट साहिब ने उसे "इण्डिया" नामक विलायत के समाचार पत्र में प्रकाशित किया था। ये बाबू रामदीन सिंह के अद्वितीय प्रेमी थे और लेखद्वारा सदा उन की सहायता करते थे।

ये हरिश्चन्द्र के बड़े भारी प्रेमी थे और उन्हें देवता के समान मानते थे। हिन्दीभाषा में तथा हरिश्चन्द्र में इन का कैसा अनुराग था यह बात निम्नोद्धृत पत्र से स्पष्ट प्रगट होगा। ये पत्र इन्हों ने कालाकांकर से बाबू रामदीन सिंह को लिखा था:—

"श्री हरिश्चन्द्रकला के प्रच्छन्न होजाने का समाचार (जो प्रियवर श्री राधा कृष्ण दास ने हिन्दुस्तान में प्रकाशित किया है) देखकर परमेश्वर जानता है जैसा खेद जी को हुवा है। हा! प्यारे हरिश्चन्द्र ने भारतसन्तान के लिए अपना सर्वस्व वार दिया उस का पलटा यह है। क्या कहें न जाने इस अभागे देश को अभी कबतक इसी हीन दशा में भिनकना है। एक बार आप से प्रार्थना करनी पड़ती है कि साहस न छोड़िए, अपने पुरखों के इस वाक्य को एकबार फिर स्मरण कीजिए कि " अङ्गीकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति।" स्वदेशियों की ना समझी पर न जाइए।

" मैं एक निर्धन पुरुष हूं। इस का बड़ा भारी प्रमाण यही विद्यमान है कि ३०) मासिक के लिए पांच मास से घर छोड़ के यहां कालाकांकर में श्री महाराज रामपाल सिंह की सेवा कर रहा हूँ। यद्यपि कानपुर (जहां घर है) में भी २५) अभी ३०) रुपये महीने मकान के किराए से मिल जाते थे, पर व्यय अधिक है, ऊपर से ऋणभार भी है। (यद्यपि वह बहुत थोड़ा रहगया है पर है तो सही) इस से यथेच्छ नहीं होता, नहीं तो कुछ कह भी सकता—अस्तु। जब से कला का पुनः प्रकाश आरंभ कीजिएगा तब से १०) प्रतिमास भेजा करूंगा और अपने मासिक पत्र ब्राह्मणद्वारा तथा अन्यान्य परिचित लोगों से अनुरोध कर-कर के ग्राहक भी यथासंभव बढ़ाता रहूंगा अधिक तो सामर्थ्य नहीं है।

" जब से कला छपने लगी है और जब तक छपी है मेरे पास बराबर आई है और यद्यपि आप ने (या बाबू साहिब प्रसाद

सिंह ने) उस का मूल्य लेना स्वीकार न किया था और मैंने भी धनाभाव से हठ न किया था पर जब देखता हूं कि केवल १२ ग्राहक हैं तो मुझे योग्य नहीं की उस का मूल्य न दूं। अतः कृपा कर के शीघ्र लिखिए कि आरंभ से और उस नम्बर तक जिस में प्रेमफुलवारी थी सब नंबरों का क्या मूल्य है। शीघ्र सूचना दीजिए तो जब तक पिछला मूल्य निःशेष न हो जायगा तब तक १०) रु० महीना पुनः ११) महीना (जब तक काला पूर्ण न हो) भेजता रहूंगा और सदा इस का ग्राहक बढ़ाता रहूंगा।"

इन लोगों का पाठकों को यहीं परिचय दे दिया गया क्योंकि आगे इन से परिचय का अवसर नहीं मिलता। अब इस ग्रंथ के नायक का हाल सुनिए।

बाबू साहिबप्रसाद सिंह को "खड्गविलास प्रेस" संस्थापन होने के पूर्व ही बाबू रामदीन सिंह से संग हुआ था और पूर्व ही से दोनों जने के हृदय में परस्पर प्रेम था।

पटना जिलान्तर्गत पुनपुन * नदी के तट पर तारनपुर नामक एक ग्राम है। वहां क्षत्रिय लोग वास करते हैं। उसी ग्राम में बाबू रामचरण सिंह से साहिबप्रसाद सिंह की बहिन का विवाह हुआ था और वहीं बाबू रामदीन सिंह का नानिहाल था। एक बार साहिबप्रसाद सिंह किसी कारणवश तारनपुर गये

---

* यह एक बड़ी नदी है जो हड़वा के दक्खिन से निकल कर फतुहा के पास गंगा में मिली है। गया के यात्री पहिले यहीं नहाते और पिंडा चढ़ाते हैं। गया रेलवे लाइन का पुनपुन एक प्रधान स्टेशन है। संस्कृत में "पुनपुनमाहात्म्य" नामक एक पुस्तक भी छपी है।

थे। उस समय बाबू रामदीन सिंह भी वहीं पढ़ते थे। वहीं दोनों पुरुषों में प्रथम भेंट हुई, वहीं दोनों के हृदय में प्रीति का बीज आरोपित हुआ। आरोपित ही नहीं हुआ, बरन वहीं प्रीतिबेली अंकुरित होकर बढ़ने लगी। दोनों ही युवक समवयस्क, दोनों ही उत्साही, परिश्रमी और विद्यानुरागी, फिर प्रेमगांठ क्यों न बँधे? साहिबप्रसाद सिंह भी कुछ दिन वहीं ठहरे और पढ़ते लगे। वहीं दोनों आदमियों ने एक प्रेस खोल कर हिन्दी की सेवा और उसके प्रचार का दृढ़ संकल्प किया। इस संकल्प में इन लोगों के सहपाठी तारनपुरनिवासी बाबू रामचरित्र सिंह और बाबू दीनदयाल सिंह भी सहमत हुए। वे लोग भी विद्यानुरागी थे, उन लोगों से भी इन लोगों की गाढ़ी मित्रता हो गई थी। उन लोगों ने भी अपने जीवन पर्य्यन्त यथासाध्य इन लोगों का साथ दिया।

उस समय हिन्दीभाषा के प्रेमियों की अति अल्प संख्या थी। भारतेन्दु ने उस के थोड़े ही काल पूर्व वर्तमान हिन्दी-प्रणाली की सृष्टि का आरम्भ किया था और विविध भांति के रचनालंकारों से नागरी को आभूषित करके उसे सचमुच सुनागरी बना रहे थे उस समय बांकीपुर में परम उद्योगी पं० मदनमोहन भट्ट वर्तमान "बिहारबंधु" प्रेस स्थापित कर चुके थे। उसी में बाबू साहिबप्रसाद सिंह ने यंत्रालय के सम्पूर्ण कार्य सीखने के विचार से कम्पोजिटर का काम करना स्वीकार किया।

श्री मदनमोहन भट्ट के छोटे भाई पं० केशवरामभट्ट "बिहारबन्धु" नामक समाचार पत्र के सम्पादक थे। "बिहारबन्धु" हिन्दी में सूबे बंगाल का प्रथम पत्र है। ३६ वर्ष से भलाबुरा सब रंग

का दिन देखता कालक्षेप करता चला आता है और समयानुसार अपना रंग ढंग भी बदलता हो जाता है। कभी मासिक, कभी पाक्षिक, कभी साप्ताहिक जब जैसी ग्राहकों की कृपा रहती है, हुआ करता है। आजकल साप्ताहिक और उन्नतावस्था में है। पं० केशवराम भट्ट ने हिन्दी भाषा में कई एक पुस्तकों की रचना की है जिन में भारतवर्षीय इतिहास (जो मिडिल स्कूलों का कोर्स था) और हिन्दी व्याकरण मुख्य हैं।

जब ये लोग तारनपुर में पढ़ते थे उस समय ये लोग छापने का खेल खेला करते थे। तारनपुरनिवासी रामचरित्र सिंह के पिता, बाबू झब्बू सिंह, कई भांति के अक्षरों को पढ़ लेते थे और वस्तुओं पर के अंकित अक्षरों का छाप उतार लेते थे। इसी से बाबू साहिबप्रसाद सिंह, बाबू रामदीन सिंह, बाबू रामचरित्र सिंह एवं बाबू दीनदयाल सिंह को पुराने अक्षरों को पढ़ने तथा प्रस्तरादि अंकित अक्षरों के छाप उतारने का बड़ा उत्साह हुआ। हाथों में अथवा किसी वस्तु में चपरा लगाकर और उस में मुद्रा रखकर ये लोग मुद्रा के अक्षरों का छाप उतारते थे, रूई के साथ मिट्टी मिलाकर और उसे कूट कर कई-एक मुद्राओं का उस में छाप लेते थे। पर्वत अथवा भीत पर के अंकित अक्षरों का छाप लेने के लिए गमछा भिंजा कर उस के अक्षरों को स्वच्छ करते थे और तब उस पर कागज चिपका कर कपड़ा की पोटली से धीरे २ उस पर देशी स्याही रगड़ते थे। इस से छाप उतर आता था। सुनते हैं कि वयोवृद्धि होने पर ये लोग अनेक स्थानों की लिपियों को इसी ढंग से उतार कर उन के आशय को समझने की चेष्टा करते और जिन को स्वयं

नहीं पढ़ सकते थे, उन्हें भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र, पं० शीतला प्रसाद जी, * उदयपुरनिवासी प्रसिद्ध कविराज † श्यामल दास आदि से पढ़वाकर उस के मर्म से अवगत होते थे। इन लोगों ने कैथी, बंगला, गुरमुखी आदि कई प्रकार के अक्षरों के पढ़ लेने का थोड़ा बहुत अभ्यास कर लिया था।

इस से स्पष्ट विदित होता है कि छापने आदि के खेलों वा कामों में इन लोगों का आदि ही से मन बहुत लगता था। इसी से "विहारबन्धु" यंत्रालय में निज इच्छित काम पाने पर साहिब प्रसाद सिंह उसे मन देकर सीखने लगे और दत्तचित्त होकर काम करने लगे। इस से कार्य-निरीक्षक-गण इन के कामों से सदा प्रसन्न रहते और इन से सर्वदा प्रीति रखते थे। अवकाश पाने से ये यंत्रालय के अन्यान्य कामों को भी सीखते जाते थे। यहां तक कि अल्पकाल ही में प्रेस के सब प्रकार के कामों से ये पूर्ण रूप से अभिज्ञ हो गए और उच्चपद प्राप्त कर लिया

---

* ये बनारस कालेज के साहित्य के प्रधान अध्यापक एवं काशी के नामी पण्डितों में थे। संस्कृत और हिन्दी के अच्छे कवि थे। यह व्याकरण के बड़े भारी ज्ञाता थे। प्राचीन अक्षरों के पढ़ने का इन्हें बड़ा अभ्यास था। पूर्वोक्त पं० छोटूराम तिवारी इन्हीं के ज्येष्ठ भाई थे।

† ये जाति के चारण एक बड़े प्रसिद्ध पुरुष थे। १८७७ ई० में श्रीमान महाराणा सज्जन सिंह ने इन के घर पर जाकर इन्हें सरदारी का चिन्ह चान्दी की छड़ी दी थी, फिर पांव में पहिनने का सोने का लंगर दिया गया। अनन्तर ये "कविराज" के पद से सम्मानित किये गये। १८८८ ई० में अंगरेजी सरकार से महामहोपाध्याय का पद प्रदान हुआ। यह विलायत के "रायल एशियाटिक सोसाइटी" तथा कलकत्ता के "बंगाल एशियाटिक सोसाइटी" के सभासद थे। इन्हों ने "वीरविनोद" नामक क्षत्रियों का बड़ा इतिहास लिखा है।

इन की कार्य्यदक्षता देखकर भट्ट जी ने यन्त्रालय के मुख्य२ कार्य्यों का भार इन्हींको अर्पण कर दिया था। वहां रहने से इन्हें बहुत से प्रतिष्ठित लोगों से परिचय का भी सुअवसर मिला था क्योंकि विद्यानुरागी लोग वहां सम्मिलित हुआ करते थे जिन में बाबू गोविन्दचरण एम० ए० बी० एल० मुख्य थे। ये भागलपुर ज़िलान्तर्गत राजमहल के एक प्रतिष्ठित अम्बष्ट कायस्थ थे। बिहारियों में यही सब से पहिले एम० ए० परीक्षा में उत्तीर्ण हुए थे, और आप ने अंगरेज़ी साहित्य में एम० ए० पास किया था। जैसे ही प्रबल अंगरेज़ी लिखनेवाले थे वैसे ही सुन्दर ललित एवं उत्तेजक व्याख्यान भी देते थे। अंगरेज़ी साहित्य में ऐसे निपुण और बिहार के ऐसे शुभ चिन्तक थे कि बड़े २ नामी बंगदेशीय सुलेखकगण भी इन से दबते थे और इन का सम्मान करते थे। ये थोड़े दिन तक "बिहारहेरल्ड" समाचार पत्र के सम्पादक थे और पीछे ज़िला आरा कुल्हड़िया के प्रसिद्ध रईस बाबू विश्वेश्वर सिंह के उद्योग से प्रकाशित "इन्डियन क्रानिकल" समाचार पत्र को सम्पादित करने लगे थे।

बिहार की उन्नति के लिए उद्योग और चेष्टा करने के लिए बिहारियों के मन में अनुराग और उत्साह दिलानेवाले पहिले यही हुए। सब लोग अनुत्साह की गाढ़ी निद्रा में सोए हुए थे। इन्ही ने अपने लेख, वाक्य तथा सम्मति द्वारा लोगों की निन्द्राभंग की। इन्ही की सम्मति से पूर्वोक्त बाबू विश्वेश्वर सिंह ने "बिहारनेशनल" कालेज संस्थापित किया। आप आदि में इस कालेज में एक घंटा अंग्रेजी पढ़ाते भी थे। यह

इन्हीं की शिक्षा का फल है कि इन के छोटे भाई हमारे मित्र वर बाबू महेशनारायण " बिहार टाइम्स " वर्तमान "बिहारी" के सुयोग्यता से सम्पादन के द्वारा बिहार प्रदेश की सेवा तथा हितसाधन में दत्तचित्त रहते हैं। हम को भलीभांति स्मरण है कि उस समय महेश बाबू को डिपुटोगिरी मिलती थी, परन्तु जिस में देश की सेवा हो सके, गोविन्द बाबू ने इन्हें उधर नहीं जाने दिया। गोविन्द बाबू की सौम्यमूर्त्ति, सहास्यमुख, सरलसम्भाषण क्या कभी भूल सकता है ?

साहिबप्रसादसिंह ने यंत्रालय की कार्य्यनिपुणता भी प्राप्त की और प्रतिष्ठितजनों से परिचय भी किया। परन्तु जिस के द्वारा विधाता कोई प्रसिद्ध कार्य्य कराना चाहता है वह क्या कभी छोटे २ कामों में अपना कालक्षेप कर सकता है? उसका चित्त क्या ऐसे कामों में लग सकता है जो केवल उस के उदर का पोषण करे ? उस का विचार, उस का मन, उस का ध्यान सर्वदा उन्नति के शिखर की ओर दौड़ा करता है। वह सुख्याति प्राप्ति के हेतु व्यग्रचित्त रहता है। साहिबप्रसादसिंह जिन्हें विधाता ने हिन्दी सेवा के निमित्त, हिन्दीसाहित्य वाटिका में स्नेहजल सींचने के निमित्त, श्री भारतेन्दु हरिश्चन्द्र निर्मित साहित्य फुलवारी को लहलही रखने के निमित्त तथा इन कार्य्यों के द्वारा देशदेशान्तर में सुख्याति प्राप्त के निमित्त संसार में भेजा था, क्या सर्वदा कम्पोजिटर रह कर पराए प्रेस में कभी अपना जीवन व्यतीत कर सकते थे, वे क्या दस रुपये के उपार्जन में अपना अमूल्य समय व्यतीत कर सकते थे ? कदापि नहीं।

तारनपुर में बाबू रामदीनसिंह से जो सम्मति हुई थी उसी का कार्य्यस्वरूप में परिवर्तन करने के उद्योग में उद्यत हुए।

बिहारबंधु प्रेस से बिलग होने की इच्छा तो इन्हें पहिलेही से थी, परन्तु एक विशेष कारण भी हो गया। जिस समय साहिबप्रसाद सिंह "बिहारबंधु" प्रेस में थे, उस समय पंडित दामोदर शास्त्री * वहां के प्रधान कार्य्यकर्ता तथा पत्रसम्पादक थे। पं० केशवरामभट्ट के समान वह भी महाराष्ट्री ब्राह्मण थे। १६०५ सं० में पूनानगर में जन्म लेकर और १७ वर्ष की अवस्था में काशी में आकर उन्हों ने विद्योपार्जन किया था। ढूंढ़ीराजशास्त्री के द्वारा भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र से परिचय होने पर यह उन के सरस्वतीभवन के कुछ दिन प्रबन्धकर्त्ता रहे। फिर बिहार कसबा के हाइ स्कूल के प्रधान पंडित हुए। बिहार ही में शास्त्रीजी को पं० मदनमोहनभट्ट से परिचय हुआ था। उन के अत्यन्त अनुरोध से ये स्कूल का काम छोड़ कर "बिहारबंधु" प्रेस को सुशोभित करने आए थे। उस पत्र को कुछ दिन सम्पादित करने के बाद उदयपुर चले गए और नाथद्वारा से संस्कृत भाषा में "विद्यार्थी" नाम पत्र प्रकाशित करने लगे।

शास्त्रीजी ने उदयपुर से बाबू रामदीन सिंह को एक पत्र लिखा कि साहिबप्रसाद सिंह को उदयपुराधीश श्रीमान राणा-सज्जन सिंह साहिब बोलाना चाहते हैं, आप उन को भेज दीजिए। परन्तु बाबू साहिबप्रसाद सिंह को बाबू रामदीन सिंह कब भेजने

---

* इन की बनाई हुई संस्कृत तथा हिन्दी के अनेक ग्रन्थ हैं जो "खड्गविलास प्रेस" की पुस्तकों की सूची देखने से विदित होगी। इन्होंने स्वयं अपना वृत्तान्त कईएक "यात्रायों" में सविस्तर लिखा है।

वाले थे, यहां तो दिनों से दूसरी बात की ठहरी हुई थी। जब पं० केशवरामभट्ट को यह खबर मिली कि उदयपुरसे ऐसा पत्र आया है तो वे बहुत घबड़ाए क्योंकि ये बड़े कार्य्यदक्ष थे। पहिले इस प्रान्त में कम्पोज़िटरों का अभाव होने से भट्टजी बहुतेरों को अपने पास से खाना पीना देकर और काम सिखलाकर अपने यंत्रालय में रखते थे। किन्तु बहुत से लोग अधिक वेतन मिलने से दूसरी जगह चल दिया करते थे। इसी से उन्हों ने प्रेस के सब कर्म्म-चारियों से प्रतिज्ञापत्र लिखवाना चाहा। इधर कर्म्मचारियों ने मन में यह ठान ली कि कुछ हो प्रतिज्ञापत्र नहीं लिखेंगे। भट्ट जी ने एक दिन सब लोगों को प्रतिज्ञापत्र लिखने के वास्ते अपने सामने बोलाकर पहिले साहिबप्रसाद सिंह से प्रतिज्ञापत्र लिखने को कहा। इन्हों ने स्पष्ट कह दिया कि "हम से प्रतिज्ञापत्र काहे को लिखवाइएगा, हम उदयपुर नहीं जायंगे, परन्तु जब तक बाबू रामदीन सिंह का प्रेस संस्थापित नहीं होता है तब तक हम आप के यहां काम करते हैं। उन का प्रेस खुलने पर हम वहां अवश्य चले जायंगे।" अन्य लोगों ने भी कुछ ऐसाही वैसा उत्तर दिया। निदान किसी ने प्रतिज्ञापत्र नहीं लिखा। साहिब-प्रसाद सिंह ने दोही चार दिन के बाद वहां का काम छोड़ दिया।

अब दोनों उत्साही वीर साहित्यक्षेत्र में अपना पराक्रम प्रगट करने को उपस्थित हुए। दोनों आदमियों में पुनः गोष्ठी हुई। उक्त बाबू रामचरण सिंह से ७००) की सहायता ली गई। वे भी उत्साही पुरुषथे और हिन्दीभाषा से विशेष स्नेह रखते थे। इन्हीं कारणों से इतना रुपया देना उन्हें निष्फल नहीं प्रतीत हुआ।

रुपया हस्तगत होने पर बाबू साहिबप्रसाद सिंह कलकत्ता जाकर एक "हैंडप्रेस" मोल लाए और १८८० ई० में "क्षत्रियपत्रिका" नाम की एक मासिकपत्रिका निकलने लगी। यह कहावत सच है "हिम्मते मरदां वो मददे खुदा।" साहस करनेही से ईश्वर भी सहायता करते हैं। "क्षत्रियपत्रिका" की एक संख्या प्रकाशित होने पर इन लोगों को हिन्दी का अकृत्रिम सेवक समझ कर ईश्वर को प्रेरणा से उदयपुराधीश देशगौरव सज्जन शिरोमणि श्री १०८ महाराणा सज्जन सिंह जी बहादुर जी० सी० एस, आइ २०००) मुद्रा पत्रिका के मुद्रणार्थ भेज कर यश के भागी हुए। उन्होंने बाबू रामदीन सिंह को पत्र में यह भी लिखवा भेजा था कि "जब कभी मुद्रा की आवश्यकता हो आप लोग निःसंकोच भाव से मुझे सूचित कीजिएगा, मैं सदा सहायता करने को उद्यत हूं।"

श्री मान उक्त महाराणा साहिब बहादुर बड़े ही विज्ञ, बड़े ही देशहितैषी और हिन्दीभाषा के बड़े ही प्रेमी थे। भला वे "क्षत्रियपत्रिका" के हितार्थ ऐसा क्यों न करते और क्यों न कहते ?

इस के अतिरिक्त अवधदेशान्तर्गत प्रसिद्ध * मझौली राज्य के युवराज म० कु० श्री लालखड्गबहादुरमल्ल जी भी जो बड़े गुणग्राहक एवं स्वयं बड़े पंडित, कवि, विद्यारसिक तथा हिन्दी के सुलेखक और सच्चे प्रेमी थे, क्षत्रियपत्रिका की सहायता पर

---

* वे संस्कृत, फ़ारसी भी अच्छी तरह जानते थे। हिन्दी में उन की बनाई १७ वा १८ पुस्तकें हैं। सभी उत्तम हैं। उन की कवितायें बड़ी ही सरस होती थीं।

कटिबद्ध हुए। द्रव्य सहायता के सिवाय लेख द्वारा भी बराबर सहायता करने लगे। श्रीमान लाल साहिब से बाबू रामदीन सिंह की पहिली भेंट ज़िला शाहाबाद के बक्सर में हुई थी जब कि वे निज मातुल श्रीमान महाराजा राधाप्रसाद सिंह बहादुर का दर्शन कर के डुमरांव से काशी जा रहे थे। उस समय बाबू रामदीन सिंह के साथ उन के मित्र बाबू रामचरित्र सिंह भी थे।

म०कु० बाबू रामदीन सिंह ने श्रीमान लाल खड्गबहादुरमल्ल ही के नाम पर निज यंत्रालय का नाम "खड्गविलास" रखा। इस का एक कारण और भी था। ये लोग क्षत्रिय थे और क्षत्रियों का खड्ग धारण करना धर्म्म है इस अभिप्राय से भी यंत्रालय का यह नाम पड़ा। परन्तु मुख्य कारण वही था।

पूर्वोक्त महानुभावों की कृपादृष्टि से "खड्गविलास" की जड़ जमी। यह अपने बल से खड़ा होने में समर्थ हो गया। अब "क्षत्रियपत्रिका" भली भांति निकलने लगी। बाबू रामदीन सिंह प्रेस के अधीश और साहिबप्रसाद सिंह मैनेजर, प्रिन्टर औ पब्लिशर हुए। उत्तम रीति से काम चलनेही के लिए ऐसा परस्पर प्रबन्ध किया गया था क्योंकि साहिबप्रसाद सिंह "बिहारबंधु" प्रेस में ही यंत्रालय के सब कामों में ऐसे निपुण हो गए थे कि बिहार में क्या पश्चिमोत्तर प्रदेश में भी प्रेस के कामों में इन की समता करनेवाले कोई बिरलाही दृष्टिगोचर होते थे, और इसी से इस प्रेस के स्वच्छमुद्रणादि की ख्याति बिलायत तक फैली हुई थी। यह प्रबन्ध एक को ऊंचा और दूसरे को नीचा दिखलाने के लिए नहीं था। चाहे कोई अधीश होता इस का हर्ष विषाद दोनों में से किसी को नहीं होता और कभी

हुआ भी नहीं। इन लोगों का परस्पर बर्ताव भी कभी स्वामी सेवक का नहीं देखा गया। इन लोगों का हृदय जैसा मिला था और परस्पर जैसा निष्कपट व्यवहार था वैसा दो सहोदरों में भी कम पाया जाता है। पूर्व जन्म के संस्कार ही से दोनों आदमियों का संग हुआ था। इसी से दोनों ने आजन्म एक रीति से प्रीति निबाही। गाढ़ पड़ने पर ये लोग एक दूसरे के लिए अपना प्राण तक देने को तय्यार रहते थे। वह सरल स्नेह, वह स्वच्छ प्रीति, वह परस्पर-हित-साधन की सदैव मनोकामना सेवक स्वामी में कम देखी जाती है। इन लोगों का स्नेह मानो कवि शिरोमणि भिखारीदास की निम्नलिखित कविता का उदाहरण ही था—

"दास परस्पर प्रेम लखो गुन छीर को नीर मिले सरसात है। नीर बिकावत आपनो मोल जहां जहां जाय के छीर बिकात है॥ पावक जारन छीर लगे तब नीर जरावत आपनो गात है। नीर बिना उफनाय के छीर सुआग में जाय मिलै ठहरात है॥"

प्रेस संस्थापित होने के थोड़े ही दिन बाद बाबू रामदीन सिंह एक बार दस्त की बीमारी से अस्वस्थ हुए। उन की जीवनाशा जाती रही। कितने डाक्टर आए, कितने हकीम वैद्य आए पर किसी की कुछ नहीं चली। उस समय साहिबप्रसाद सिंह यह नहीं बिचारते थे कि नौकर आवेगा तो अशुद्ध वस्त्र हटावेगा, नौकर आवेगा तो मल उठा ले जायगा। भृत्य की कुछ प्रतीक्षा न करके ये सब काम स्वयं कर लेते। बाबू रामदीन सिंह के उदास होने पर उन्हें ढारस बंधाते। किन्तु कभी २ स्वयं व्यग्रचित्त और अधीर हो कर, बिलग बैठ कर फूट २ कर रोते और अश्रुधारा प्रवाहित करते तथा ईश्वर से उन के निरुज होने के लिए विह्वल कंठ से प्रार्थना करते। प्रेममय

प्रार्थना का शीघ्रही प्रभाव हुआ। ईश्वर की असीम कृपा से बाबू रामदीन सिंह जी रोगमुक्त हुए। उन की बीमारी नहीं दूर हुई मानो साहिबप्रसाद सिंह के मृतक शरीर में पुनः जीवनसंचार हुआ। सच तो यह है कि इन लोगों में स्वामी सेवक का भावही नहीं था वरन बंधुत्व था। मैनेजर और मालिक ये नाम तो कार्य्य निर्वाह के लिए रख लिए गए थे। इसी से सिवाय निज के लोगों के वा उन लोगों के जिन्हें प्रेस से घनिष्ट सम्बन्ध था दूसरा कौन था जो साहिबप्रसाद सिंह को "खड्गविलास" का स्वामी न समझता हो?

"खड्गविलास" यंत्रालय के ये मैनेजर थे सही, पर इन के ज़िम्मे कोई खास काम नहीं था। प्रेस की आरम्भिक अवस्था में जब कि कर्म्मचारी अधिक नहीं थे, ये स्वयं कम्पोज़ कर लेते, और आवश्यकता होने से दौड़ कर डाकघर में चिट्ठी आदि भी छोड़ आते थे। प्रेस की आर्थिकदशा अच्छी होने पर जब कर्म्मचारियों की संख्या अधिक हो गई, तब ये सबों का काम नीरीक्षण करते, प्रूफ़ संशोधन करते, पुस्तक लिखते लिखाते और बाबू रामदीन सिंह को सावकाश नहीं रहने पर प्रेस के हितसाधनार्थ स्थानीय वा अन्यप्रांतीय प्रतिष्ठित पुरुषों से साक्षात किया करते थे।

इन की नित्य की क्या दिनचर्य्या थी यह लिखना कठिन है क्योंकि यंत्रालय का, घर का, बाहर का सब कामों का भार तो इन्हीं के माथे था दूसरा करनेवाला वा देखनेवाला थाही कौन? अतएव इतनाही कहना बहुत है कि नित प्रति यंत्रालय की उन्नति एवं बाबू रामदीन सिंह के हित का कोई काम ऐसा न था जो साहिबप्रसाद सिंह नहीं करते हों वा करने में संकुचित होते हों।

इन्ही कारणों से बाबू रामदीन सिंह को दृढ़ विश्वास था कि इन के नहीं रहने पर इन की कीर्ति तथा सम्पत्ति की रक्षा करने वाला, लड़कों को सुशिक्षित तथा सुपथगामी बनाने वाला साहिबप्रसाद सिंह के सिवाय दूसरा कोई नहीं होगा। यही बात बाबू रामदीन सिंह ने अपनी डाइरी में भी लिखी है।

इसी विश्वास से, जब कभी बाबू रामदीन सिंह रोगग्रस्त होते थे तो चट एक "विल" लिख देते थे कि "हमारे बाद प्रेस का पूर्ण अधिकार साहिबप्रसाद सिंह को है" जिस बात से साहिबप्रसाद सिंह बहुत रुष्ट भी होते थे और कहने लगते थे कि "लड़कों के रहते आप ऐसा क्यों करते हैं और ऐसा क्यों अधीर हो जाते हैं।"

म० कु० रामदीन सिंह यही नहीं करते थे वरन प्रायः स्पष्ट कहा करते थे कि "यह प्रेस वा और जो कुछ हमारा है सोसब यथार्थ में साहिबप्रसाद सिंह का है।" और कारण यह बताते थे कि "जो वस्तु जिस के उद्योग से प्राप्त हो वह सचमुच उसी की है।"

बाबू रामदीन सिंह केवल ऐसा कहते ही नहीं थे, वरन उन का कार्य्य भी ऐसा ही हुआ करता था। निज पैतृक स्थान रेपुरा ग्राम में जो उन्हो ने एक बार १००००) मूल्य की भूमि क्रय की, वह साहिबप्रसाद सिंह ही के नाम से खरीद हुई, और पटना में जो वाटिका ली गई वह साहिबप्रसाद सिंह के भतीजे रामप्रसाद सिंह के नाम से ली गई। रामदीन सिंह जी ने अपने वा अपने पुत्र रामरणविजय सिंह के नाम से नहीं क्रय किया। साहिबप्रसाद सिंह उन्हें सदा कहते थे कि "आप ऐसा न कीजिये, सम्भव है कि मेरे नही रहने पर ऐसा करने से

कुछ बखेड़ा उठ खड़ा हो, परन्तु रामदीन सिंह जी उन के कहने पर कुछ कान नहीं देते थे। बाबू रामदीन सिंह की सम्पत्ति को जिस यत्न से ये रखते थे और उस का प्रबन्ध करते थे वैसा बाबू रामदीन सिंह स्वयं नहीं कर सकते थे। इसी से साहिब प्रसाद सिंह के कामों का वह कभी देख भाल भी नहीं करते थे। मनेजर साहिब जो चाहते वही करते, और जिस वस्तु को जिस रीति से इच्छा होती उस को उसी रीति से रखते थे।

इन्हीं कारणों से जब बाबू रामदीन सिंह रोगग्रस्त होकर आरा जाकर पं० बालगोविन्द तिवारी * सुप्रसिद्ध वैद्य की औषधि सेवन करते थे, तो अपने रोग को असाध्य देखकर और यह स्मरण करके कि हमारे परम शुभचिन्तक, निष्कपटसहायक निःस्वार्थ प्रेमी साहिबप्रसाद सिंह भी इस भूतल में नहीं रहे, हमारे प्रेस का काम कैसे चलेगा, हमारा ग्रंथालय हिन्दी की सेवा में कैसे समर्थ होगा, तथा हमारे परिवार का यत्नपूर्वक सेवा सुश्रूषा कौन करेगा, बहुत चिंता करते थे।

सुनते हैं कि साहिबप्रसाद सिंह के स्वर्गवास पर म०कु० रामदीन सिंह श्रीहर्ष कवि कृत निम्नलिखित कवित्त प्रायः चिंता से पढ़ा करते थे:—

---

* ये बड़े भारी पंडित, बड़े नामी वैद्य एवं विद्यानुरागी पुरुष हैं। इस प्रान्त में इन का बड़ा नाम है। आरा नागरीप्रचारिणी सभा के ये सभा-पति हैं। वैद्यक में ऐसे बढ़े चढ़े हैं कि डाक्टर तथा सिविल सार्जन लोगों से टक्कर लगाते हैं और वे लोग भी इन का बहुत आदर और मान करते हैं। ये बड़े ही सज्जन पुरुष हैं।

"गजदंत सुंड बिन सिंह पंजा नख बिन हंस बिना रवि यथा निशि शशि हीन है। भुजा ते रहित नर फणि यथा मणि बिन जल बिना मीन त्यों पतङ्ग पक्ष हीन है। कहैं शिवहर्ष ज्यों सुकंज बिना सरवर दीप बिना भौन यथा रहत मलीन है। तैसो बिनु आप बाबू साहिबप्रसाद सिंह कारज करैगो का अकेलो रामदीन है॥"

और कभी २ विशेष चिन्तित होने पर यह कविता भी पढ़ा करते थे:—

"रावरे लिये तो कछु सोच ना मनेजर जू आपनेई पुण्य आप्त सब सुख पावेंगे। बढ़ि कै यहां ते सतकार मरजाद मान आदर कै पोच वहां देवता बनावेंगे। किन्तु अफसोस याही खङ्ग-विलास काज आप की समान कौन दूसरो चलावेंगे। बाबू रामदीन सिंह जू कै सब बातन में होइ कै सहाय सारी चिन्तना हटावेंगे।"

साहिबप्रसाद सिंह के देहान्त होने से बाबू रामदीन सिंह के चित्त की ऐसी अवस्था होनी कोई आश्चर्य्य की बात नहीं थी क्योंकि साहिबप्रसाद सिंह जब तक जीवित रहे इन्हों ने उन्हें कार्य्य सम्बन्धी कोई चिन्ता कभी व्याप्त होने न दी। बाबू रामदीन सिंह इन के भरोसे ऐसा निश्चिन्त रहते थे कि वे कभी इस की कुछ खोज भी नहीं करते थे कि हमारे घर में वा प्रेस में क्या हो रहा है और उस की क्या अवस्था है। आप केवल लिखने पढ़ने के काम में सर्वदा प्रवृत्त रहते थे।

साहिबप्रसाद सिंह का बाबू रामदीन सिंह ही के साथ ऐसा

गाढ़ प्रेम नहीं था। ये उन के लड़कों को भी निजात्मज के समान लालन पालन करते थे। रामदीन सिंह जी की प्रथम सहधर्म्मिणी ने श्री रामरणविजय को अति शिशु काल में छोड़ कर शरीर त्याग किया। परंतु साहिबप्रसाद सिंह के लालन पालन से उन के मन में मातृ वियोग का दुःख कभी तनिक भी व्याप्त होने नहीं पाया। बाबू रामदीन सिंह जी के अन्य पुत्र श्री शारंगधर तथा रामजी भी सारा दिन मनेजर हो साहिब के अंक में लगे रहते थे, मातासे केवल दुग्ध पानही का नाता रखते थे। इन के शरीर त्याग करने पर रामरणविजयसिंह ही को कौन कहे ये दोनों छोटे २ बालक भी प्रेस में चतुर्दिक मनेजरसाहिब को खोजते और इन्हें न पाकर बिलख २ कर रोने लगते थे।

यहांतक खड्ग विलास यंत्रालय के संस्थापन एवं साहिब प्रसाद सिंह तथा बाबू रामदीन सिंह आदि के परस्पर प्रेम की कथा वर्णन की गई। अब हम इन के उन कार्य्यों का संक्षिप्त विवरण लिखते हैं जिन के कारण "खड्ग विलास" यंत्रालय एवं इस के स्वामी तथा कार्य्यकर्त्ता की इतनी सुख्याति हुई।

"क्षत्रियपत्रिका" प्रकाशित होने का हाल ऊपरही वर्णन हो चुका है। १८८३ ई० से विविध-विषय-विभूषित "भाषाप्रकाश" नामक एक मासिक पत्र इस यंत्रालय से निकलना आरम्भ हुआ था, किन्तु थोड़े ही दिन चल कर ठहर गया।

भारतेन्दु बाबूहरिश्चन्द्र के जीवन कालही में साहिब प्रसाद सिंह ने उन की बनाई कई एक पुस्तकें निज यंत्रालय में मुद्रित

की थी। भारतेन्दु से इनको बहुत भेंट थी। भारतेन्दु के साथ इन लोगों की प्रीति होने के कारण भी श्री मान् लाल खड्गबहादुर मल्लजी हुए थे। साहिबप्रसादसिंह कई बार बनारस जाकर भारतेन्दु से मिले थे और वे भी एक बार प्रेस में आए थे। उस समय इन के बाल्यकाल के सखा तारनपुरनिवासी रामचरित्र सिंह और दीनदयाल सिंह भी प्रेस ही में थे।

उस समय सब को भारतेन्दु से भेंट हुई थी। भारतेन्दु रात भर बैठे इन लोगों से भिन्न २ विषय की बातें करते रहे। भोर को उन्हों ने बाबू रामदीन सिंह के पुस्तकालय के निरीक्षण किया और कई एक पुस्तक पढ़ने के लिए लेभी गए। फिर बाबू रामदीन सिंह, साहिबप्रसाद सिंह रामचरित्र सिंह तथा दीनदयाल सिंह के साथ भारतेन्दुजी गोलघर, अदालत, दरगाह, पत्थर की मस्जिद, हरिमन्दिर * आदि स्थानों को देखने गए।

---

* यहां सिक्खों के दशवें पादशाह श्री गुरुगोविन्दजी का १६६० ई० में आविर्भाव हुआ था। उसी स्थान पर पंजाब केशरी महाराज रंजीत सिंह ने एक भारी मन्दिर निर्माण कराया है जो बहुतही दर्शनीय है। इस मन्दिर में श्री दशवें गुरु का खड़ाऊं और उन के हस्ताक्षर से भूषित गुरुग्रंथ साहिब अब तक वर्तमान हैं। सिक्खों के चार मुख्य स्थानों में से एक यह स्थान भी है। पंजाबी लोग दर्शनार्थ यहां सदा आया करते हैं। सब पंजाबी राजवाड़ों की ओर सेयहां मासिक वा वार्षिक पूजा नियत है। सरकार की ओर से भी कुछ नियत है। पहिले सरकार की ओर से साल में आधमन अफ़ीम मिलता था। परंतु १८६२ ई० में दो आदमी उस के पाने का दावीदार हुए, इस से सरकार ने उसे देनाही बन्द कर दिया। जितने लाट अथवा गवर्नर बांकीपुर आते हैं वे मन्दिर देखने अवश्य जाते हैं। इस मन्दिर की अवस्था शोचनीय हो गई थी। किन्तु १०८ बाबा सुमेरसिंह साहिब साहिबज़ादे के समय में उन के उद्योग से इस का जीर्णोद्धार हुआ, कारण यह कि पंजाब तथा अनान्य प्रान्तों में इन की बड़ी

और कई स्थानों की लिपियों का उन्हों ने छाप लिया। चलते समय बाबू रामदीन सिंह ने एक पगड़ी, एक थान और ५००) नक़द भारतेन्दु जी को विदाई दी और साहिबप्रसाद सिंह ने स्वयं ७५) विदाई से उनका सत्कार किया। भारतेन्दु से इन्हें सर्वदा पत्र व्यवहार रहा और जैसी इन लोगों में प्रीति थी वह पत्रों ही से प्रगटित होती है।

हरिश्चन्द्र के अस्त का अशुभ समाचार पाते ही उसी दम शोक प्रकाश के लिए ये काशी गए थे और वहां से लौट आने पर इन्होंने बाबू रामदीन सिंह को बनारस पिठाया था।

श्री हरिश्चन्द्र की कीर्ति कला सर्वत्र प्रसारित करने के लिए बाबू रामदीन सिंह के आदेश से ये १८८७ ई० से "हरिश्चन्द्रकला" पत्र प्रकाशित करने लगे थे जो आज तक रसिक चकोरों को आनन्द दे रहा है। उस समय इन्होंने एक बड़ा विज्ञापन प्रकाशित किया था जिस से भारतेन्दु तथा हिन्दी साहित्य से इन की गाढ़ी प्रीत प्रदर्शित होती है।

"हरिश्चन्द्रकला" प्रकाशित होने पर हिन्दी के सब समाचार पत्रों ने हर्ष प्रगट किया था। "आर्य्यावर्त" * २ पत्र में यह कविता भी छपी थी।

प्रतिष्ठा होती थी। अपने धर्म्म के मर्मज्ञ होने के सिवाय ये बड़े कवि एवं काव्य शास्त्र के बड़े ज्ञाता थे। इन के रचे कई एक काव्य ग्रन्थ गुरमुखी अक्षरों में छपे हैं और कितने अप्रकाशित हैं। भारतवर्षीय सभी कविसमाज के ये आदरणीय सभासद और पटना कवि समाज के सभापति थे। बाबू रामदीन सिंह और साहिबप्रसाद सिंह इन से बड़ा ही स्नेह रखते थे और इन का सदा सम्मान करते थे। १९०२ ई० में इन का परमधाम हुआ। अब इन के भतीजे बाबा विचित्र सिंह इस मन्दिर के महंथ हैं। हरिमन्दिर की, गली एकमहल्ला प्रसिद्ध है।

* आर्य्यावर्त प्रथमखंड, संख्या ४२। ४३.

"रामदीन नाहि अस लीन सोइ जग मांहि कौन अति दीन चोर चाकर लबार को। साहिबप्रसाद पाय छाय गयो चारों ओर चहकि चकोर चाह चन्द्रिका प्रचार को॥ भारत निहारत सकल दिस आरत ह्वै कबि को सुधारत सुधारत गवांर को। मुद मे कुमुद लखि रसिक समाज आज व्याज त्याज भाज गये चकवा कुचार को॥"

१८९१ ई० से हिन्दी के प्रसिद्ध सुलेखक, बाबू रामदीन सिंह के परम सहायक और शुभचिन्तक श्री पण्डितवर प्रतापनारायण मिश्र द्वारा सम्पादित "ब्राह्मण" नामक मासिकपत्र गम्भीर आशयपूर्ण प्रबल चमत्कृत तथा ओजस्वी लेखों से भूषित इसी यंत्रालय से प्रकाशित होने लगा था। श्री पण्डितजी के स्वर्गगमन के अनन्तर दो मास उन का शोक प्रकाश कर के उस ने सर्वदा के लिए मौन व्रत धारण किया।

कुछ दिन तक "द्विज पत्रिका" भी दर्शन देने लगी थी। परन्तु जब "ब्रह्मण" ही नहीं रहा, तो "द्विजपत्रिका" विचारी कैसे रहे।

विद्यार्थियों के हितार्थ साप्ताहिक पत्रिका 'शिक्षा' एवं मासिकपत्र "विद्या विनोद' इन्ही के समय से प्रकाशित होना आरम्भ हुआ था। ये दोनों-पत्र और पत्रिका तथा 'हरिश्चन्द्रकला" अद्यावधि इस यंत्रालय से प्रकाशित हुआ करते हैं और उपयोगी समझे जाने के कारण सरकारी आज्ञा से इन पत्रों की शिक्षा विभाग में अधिक खरीद होती है।

इस यंत्रालय से तथा बाबू साहिबप्रसाद के उद्योग से लिखित वा प्रकाशित कितनी पुस्तकें छपी इस की गणना हम

नहीं कर सकते। परंतु साहिबप्रसाद सिंह ने जो स्वयं कई एक पुस्तकें लिखी थी वा संग्रहीत की थी उनका संक्षिप्त विवरण लिख देना बहुत आवश्यक दीखता है क्योंकि इससे इन की योग्यता और विद्यानुरागिता प्रगट होती है।

'सज्जनविलास'—यह पुस्तक पूर्वोक्त श्रीमन्महाराणा सज्जन सिंह बहादुर के० सी० एस० आई मेवाड़ पति के आज्ञानुसार रची गई थी। इस में कईएक सुन्दर प्रबन्ध देखे जाते हैं जिन में से 'छापने की विद्या' 'क़ाग़ज़ बनाने की रीति' 'घास का काग़ज़' 'भारतवर्ष में प्राचीन काल में काग़ज़ था वा नहीं' ये सब विषय बड़े उपयोगी हैं। इन प्रबन्धों में जो सब टिप्पणियां दी गई हैं वे लेखक के परिश्रम का परिचय देती हैं। प्रेस के प्रबन्धकर्त्ता को ऐसे विषयों पर प्रबन्ध लिखना उचित ही था।

"गुरुगणित शतक"—इस में सौ गुरु (कल वा गणित नियम) छन्दबद्ध दिये गये हैं जो विद्यार्थियों तथा व्यापारियों के बड़े काम के हैं। छन्दों के नीचे वार्तिक में प्रत्येक उदाहरण दिया गया है। यह पुस्तक चार खंड में लिखी गई है। और पहिली बार "बिहारबन्धु" ही प्रेस में छपी थी इन्हों ने इस पुस्तक की सामग्री लीलावती, गणितसार प्रभृत हिन्दी के ४२ ग्रंथों से तथा बंगला के १० ग्रन्थों से संग्रहीत की थी जैसा कि इस की भूमिका देखने से ज्ञात होता है। इस के आदि में जो संस्कृत का श्लोक है उस के प्रत्येक चरण के आदि के अक्षरों के योग से "भूदेव मुखोपाध्याय" और अन्त के अक्षरों से "रामदीन सिंह खत्री" ऐसा नाम निकलता है। यह पुस्तक बिहार के स्कूलों के अति

विख्यात इन्सपेक्टर बाबू भूदेव सुखोपाध्याय की आज्ञा से निर्माण हुई थी।

उक्त बाबू भूदेव सुखोपाध्याय ही विहार प्रान्त में हिन्दी के प्रचार के मुख्य कारण हो गए हैं। उन्हों ने इस के लिए बहुत कुछ यत्न किया था। उन्ही के समय में विहारियों की कुछ रुचि हिन्दो की ओर झुकी। उन्ही के समय में विहार प्रान्त के शिक्षा-विभाग के कर्मचारियों ने विद्यार्थियों के उपयोगी कई एक पुस्तकों की रचना की। पूर्वोक्त "गुरु गणित शतक" की समालोचना में तत्कालीन हिन्दीभाषा के प्रसिद्ध समाचार पत्र "उचितवक्ता" में लिखा था कि "हम लोग आशा करते हैं कि भूदेव बाबू के यत्न से विहार प्रान्त में हिन्दी की सभी प्रकार की पुस्तकें (जिस प्रकार बंगला में हैं) प्रकाशित हो जायंगी क्योंकि जब से उक्त महाशय विहार प्रान्त में आए हैं दिन दिन हिन्दी पुस्तकें बढ़ती जाती हैं। यह देख कर हम लोगों को जान पड़ता है कि कुछ दिनों में विहार प्रान्त में पश्चिमोत्तर प्रदेश की अपेक्षा पुस्तक संख्या अधिक हो जायंगी।" जो हो, पर इस आदि उद्योग के लिए विहार भूदेव बाबू का निस्सन्देह बाधित है और सदैव रहेगा।"

पूर्वोक्त " गुरु गणित शतक " " गुरु गणितबतीसी " तथा "पहाड़ा प्रकाश" से विदित होता है कि इन्हें गणित एवं विद्यार्थियों के उपयोगी पुस्तकें लिखने में अनुराग था।

"काव्यकला"—यह पुस्तक १८८५ ई० में छपी थी। इस में

तद्कालीन अनेक कवियों की समस्या पूर्तियां संग्रहीत हुई हैं। इस पुस्तक के तथा "रसरहस्य" "रसिभक्तमाल" आदि ग्रन्थों के प्रकाश करने से पाठक वर्ग अवश्य अनुमान करेंगे कि इन की कविता में भी रुचि थी।

इस की भूमिका से ज्ञात होता है कि इस के पहिले समस्यापूर्ति की केवल एकही पुस्तक श्री कविदुर्गादत्त द्वारा "समस्या—पूर्ति—प्रकाश" निकली थी।

'दयानन्द मतमूलोच्छेद"—यह पुस्तक १८८६ ई. में प्रकाशित हुई। जब पहिले पहल स्वामी सहजानन्द ने बांकीपुर में आकर आर्य्यसमाज के सिध्यान्तों का प्रचार कर के नवशिक्षित युवकों का मन सनातन धर्म्म से फेरना आरम्भ किया था, उस समय बाबू रामदीन सिंह एक दिन उन से मिले और उन का बहुत कुछ कटु वाक्य सुनने के अनन्तर उन से कहा कि 'व्यर्थ का कोलाहल मचाने से क्या प्रयोजन, आप को अपने आर्य्य समाज का गौरव संस्थापन करना हो तो हम पंडित बुलाते हैं आप-शास्त्रार्थ करने को उद्यत हूजिए।'

उसी समय श्री पंडित अम्बिकादत्त व्यास काशी से बांकीपुर बोलाए गए। इन का जन्मस्थान जयपुर में था। परंतु ये बाल्यावस्था ही से अपने परिवार के संग काशी रहते थे। संस्कृत, हिन्दी, ब्रजभाषा, जयपुरीभाषा, बंगला, पंजाबी, महाराष्ट्री आदि कई भाषाओं के ये ज्ञाता थे। संस्कृत तथा हिन्दी में इन के बनाए कई ग्रन्थ वर्तमान हैं। इन्हों ने 'बिहारीसतसई के सब दोहों पर कुंडलिया बना कर "बिहारीबिहार" नामक

ग्रन्थ प्रकाश किया है। ये प्रसिद्ध हिंदूधर्म्मप्रचारक हो गए हैं। धर्म्मोपदेश में २५ वर्ष तक इन के नाम का डंका बजता रहा और इन के नाम के श्रवणमात्र से आर्य्य समाजियों का कलेजा कांपता रहा। पीछे ये बिहार के कई जिला स्कूलों में रह कर अन्त में पटना कालिज के संस्कृत प्रोफेसर भी हो गए थे।

इन से बाबू रामदीन सिंह आदि से पहिले का परिचय था। पूर्व में एकबार पंडा मोहनलाल के संग डुमरांव निवासी म० कु० बाबू गोविन्दसिंह का परिचयदायक पत्र लेकर ये 'खड्गविलास प्रेस में आए थे। उस समय इन की अवस्था बहुत कम थी। परन्तु तब भी आकृतिही से तेजी और बुद्धि प्रगट होती थी। जिस दिन आए थे, वह रात कविता, सितार, गान और खेलादि में व्यतीत हुई थी; और उसीरात को बाबूरामदीन सिंह के कहने से इन्होंने 'द्रव्यस्तोत्र' की रचना की थी जो साहिबप्रसाद सिंह के प्रबन्ध से भोरेही मुद्रित भी हो गया। उसी समय व्यासजी ने 'वैष्णवपत्रिका' प्रकाश करने तथा 'सांख्य' पर भाष्य लिखने की बात कही थी और बाबू रामदीन सिंह जी ने यथोचित सहायता देने की प्रतिज्ञा की थी।

इस बार व्यास जी के आने पर बाबू रामदीन सिंह के उद्योग से बांकीपुर में उन की कई एक वक्तृताएं हुईं। एक वक्तृता में उन्हों ने स्वामी दयानन्द जी के इस कथन का कि "ब्राह्मण भाग वेद नहीं है" बड़ी विज्ञता से खंडन किया था। वही व्याख्या एक बृहत भूमिका तथा उर्दू और अंगरेजी अनुवाद के साथ

दयानन्दमतमूलोच्छेद के नाम से छपा है। "ओवरलैण्डमेल" १ अकतूबर १८८६ में इस के सम्बन्ध में लिखा था:—

"यह (हिन्दी भाषा में लिखी हुई) पुस्तक जो हम लोगों के सामने है, साहिबप्रसाद सिंह नामक एक उत्साही तथा सुशिक्षित पुरुष की रची हुई है जो कि इस बात के सिद्ध करने में कृतकार्य्य हुए हैं कि दयानन्द का पक्ष अप्रतिपादनीय है।"*

"बड़े जोर के साथ मि० साहबप्रसाद सिंह दयानन्द की विद्वत्ता तथा धर्मसम्बन्धी मत दोनों में दोष दिखलाने को अग्रसर हुए हैं और अपने कथन को पंडित अम्बिकादत्त व्यास की प्रबल युक्तियों से, जो कि अन्यान्य सनातनधर्मी हिन्दुओं के साथ सनातनधर्म के समर्थन में चित्त लगा कर व्याख्यान दे रहे हैं, पुष्ट किया है। वक्ता महाशय के इस कथन से कि सहस्रों हिन्दुस्तानियों को अपने पूर्व पुरुषों का धर्म जानने में गाढ़े रूप से मन लगाते देखना एक आनन्दसूचक विषय है, हम लोग दिल और जान से सम्मत हैं।†

"भाषासार"—हिन्दीसाहित्य का एक अपूर्व संग्रह है।

---

*The work before us (written in the Hindi language) is by an energetic and enlightened gentlman, Sahab Prasad Sinha, who succeeds in demonstrating the untenable position of the good hearted Dayanand.

† Mr. Sahib Prasad Sinha has come forward to denounce with uncompromising vigour both the scholarship and the religious opinions of Dayanand and has fortified his discourse with the cogent reasoning of Pandit Ambikadutta Vyasa, who in conjuntion with other orthodox Hindus, has been lecturing earnestly in defence of the traditional faith. We cordially agree with the statment of the lecturer that it is a happy sign to find thousands of Indians interesting themselves deeply in the religion of their forefathers &. &.

यह पुस्तक बहुत दिनों तक मिडिल स्कूलों में एवं संस्कृतसंजीवनी परीक्षा में नियत थी। इस का ११ संस्करण हुआ है। इस के विषय में हम स्वयं कुछ कहना नहीं चाहते। मान्यवर जी० ए० ग्रियर्सन साहिब महोदय लिखित इस किताब की समालोचना का कुछ अंश अनुवाद के सहित उद्धृत कर देते हैं। उन्हों ने लिखा था कि "जिन लोगों को हिन्दी पुस्तकों की आवश्यकता हो, उन लोगों को हम सम्मति देंगे कि बांकीपुर (पटना) खड्गविलास यन्त्रालय के बाबू साहिबप्रसाद सिंह से पत्र व्यवहार करें। यह महाशय तथा इन के साथी बाबू रामदीन सिंह बड़े भारी पुस्तक प्रकाशक हैं और जिज्ञासुओं को उन स्थानों का पता बता सकते हैं जहां छपी हुई पुस्तकों की लब्धि की अधिक सम्भावना हो। ....

*"भाषासार" (भाग २) नामक ग्रन्थ पर भी जो इन्हीं पुस्तक प्रकाशकों के द्वारा प्रकाशित हुआ है लोगों का ध्यान आकर्षित करेंगे। हमारी राय में जितने हिन्दी रीडर वर्तमान हैं उन सबों में उच्चावस्था के छात्रों के लिए यह बड़ाही उत्तम है।

इसी पुस्तक के संबन्ध में एक विलायती अखबार "दी ओवरलैण्डमेल" (The Overland mail †) में यह लिखा था:—

---

* I should advise persons in want of Hindi books to put themselves in communication with Babu Sahib Prasad Sinha, Khadga Vilas Press, Bankipore (Patna). This gentleman, and his partner Babu Ramdin Sinha, are extensive publishers, and can direct the enquirer as to the most likley places for finding printed books. I would also draw particular attention to a work entitled Bhasha Sar (part II), which comes from these publishers. In my opinion it is the best Hindi reader for advanced students extant.

† We have just received a copy of the Bhasha Sar, which is put

"अभी हमलोगों को "भाषासार" की एक प्रति प्राप्त हुई है जिस में 'सर्वोत्तम हिन्दी ग्रन्थों से' विषय सब संग्रहीत हुए हैं। हिन्दुस्तानी देशहितैषियों के लिए स्वदेशी बोलचाल की महान भाषा के अनेकानेक नमूनों को इस ढंग से (सर्व-साधारण के सन्मुख) उपस्थित करना जिस से यह विदित हो कि उस भाषा के लिए जिस मान के लिए लोग प्रार्थी हैं उस की वह योग्यता रखती है सचमुच एक बहुतही उचित चेष्टा कही जायगी"।

इस पुस्तक की समालोचना एक अन्य विलायती पत्र "होमवर्डमेल" में भी हुई थी।

'भाषातत्त्व बोध'—यह पुस्तक छोटे २ बालकों के पढ़ाने योग्य बड़ा ही उपयोगी है और दो भागों में लिखी गई है। पहिले में वर्णशिक्षा और दूसरे में सरल भाषामय छोटी२ कहानियों में उपदेश है। दूसरा भाग इन दिनों पटना भागलपुर और छोटानागपुर के डिवीजनों में 'इन्टरमीजियट क्लास में' कोर्स है।

इन की बनाई 'स्त्रीशिक्षा' जो कि तीन भागों में है एवं 'सुताप्रबोध' से स्त्रियों की शिक्षा में बड़ा उपकार हुआ है। स्त्रियों को किस प्रकार से गृहकार्य्यादि करना एवं गार्हस्थ्य धर्म्म, नारीधर्म्मादि निबाहना चाहिए इन्हीं विषयों पर सुन्दर उपदेशमय प्रबन्ध 'स्त्रीशिक्षा' में लिखे गए हैं, और विख्यात

---

forth as a compilation from the "best works in Hindi". It is really very worthy attempt on the part of patriotic Indians to persent numerous specimens of the great Vernacular of their country in a manner calculated to show that it is deserving the recognition they demand for it &. &.

गुणवती महिलाओं की कथाएं 'सुताप्रबोध' में भरी हुई हैं। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र कृत 'स्त्रीशिक्षा' के बाद कदाचित् इन पुस्तकों से बढ़कर उपयोगी पुस्तकें और नहीं देखी जाती हैं। ये पुस्तकें कई बार छपीं और अभी तक इन के ग्राहक ग्राहक पूर्ववत् पाए जाते हैं।

फ्रेडरिक पिन्काट साहिबकृत 'बालदीपक' को भी प्रकाश करके इन्होंने हिन्दी पढ़नेवाले बालकों को बहुत लाभ पहुंचाया है।

पिन्काट साहिब विलायत में रहते थे १८३६ ई० में एक सामान्य निर्धन कुल में उन का जन्म हुआ था। कुछ दिन विद्योपार्जन कर के यह भी इन्हीं के समान पहिले एक यंत्रालय में कम्पोज़िटर हुए थे। और पीछे आप ने एक मित्र की सहायता से संस्कृत में अभ्यास किया। फिर, उर्दू, बंगला, गुजराती, फ़ारसी, टैलिगू तथा तामीलो भाषा पढ़ी। अन्त में हिन्दीभाषा में परिश्रम करके उन्होंने इतनी योगता प्राप्त की, कि भारतेश्वरी महारानी विक्टोरिया का जीवनचरित्र हिन्दीभाषा में लिख डाला। यह भारतेन्दु तथा अन्यान्य हिन्दी प्रेमियों को बड़े आदर की दृष्टि से देखते थे। ये सब भाषा यह विलायतही में सीखे थे। कुछ दिन हुआ कि यह भारतवर्ष में यात्रा के लिए आए थे और इसी देश के लखनऊ नगर में इन्होंने स्वर्ग को पयान किया। सच है 'क़ज़ा क़ब्रि हरजा कि खाहद बरद।' होय जाहि दिस इच्छा हरि की, नाव जात है ताही ओर।

साहिब प्रसाद सिंह की विद्योत्साहिता का अनुमान केवल इन की रची पुस्तकों ही से नहीं किया जायगा, किन्तु हिन्दी

के प्रचार तथा हिन्दी पुस्तकों के प्रकाश के लिए ये जैसा यत्न-वान रहते थे उस से इस का अनुमान करना होगा। 'बिहार-दर्पण' पुस्तक छापने के हेतु सामग्री एकत्रित करने को ये लोग निज मित्र रामचरित्र सिंह के साथ टिकारी, डुमरांव, मझ्मदपुर आदि अनेक स्थानों में गए थे, और बड़े परिश्रम से भिन्न२ स्थानों से इन लोगों ने सामग्री संग्रह की थी। इस पुस्तक में बिहार प्रान्त के प्राचीन तथा आधुनिक २४ महात्माओं और महानुभावों का जीवन वृत्तान्त वर्णन किया गया है। इस प्रकार की पुस्तक रचना के लिए पूर्वोक्त बाबू भूदेव मुखोपाध्याय ने कई लोगों से कहा था परन्तु कोई इस कठिन कार्य्य के करने को उद्यत नहीं हुए। बाबू साहिब प्रसाद सिंह और बाबू रामचरित्र सिंह ही के श्रम का फल था कि बाबू रामदीनसिंह इस के लिखने को समर्थ हुए। इस से यह भी विदित है कि ऐतिहासिक विषय के अनु-सन्धान में इन लोगों का बहुत मन लगता था।

भारतवर्षीय वीर पुरुषों, कवियों तथा पतिव्रता स्त्रियों का वृत्तान्त संग्रह करने के अभिप्राय से इन्होंने बड़े उत्साह से निज मित्रों के पास एक प्रार्थनापत्र भेजा था और उसी में प्रकाश करने के योग्य सब बातों के लिख भेजने के लिए निवेदन किया था। वह पत्र यहां पर उद्धृत कर दिया जाता है।

"देखिये तो

ज़रा मन लगा के पढ़िये।

यों तो सभी देशों का गौरव वहां के शूर सती और कवियों पर निर्भर होता है किन्तु हमारा भारतवर्ष तो सदा इन्हीं पुरुष

रत्नों से द्वारा अलंकृत रहा है। आज कल इस की जो कुछ दुर्दशा हो रही है उस के विशेष कारणों में से एक यह भी है कि बहुत दिनों से ऐसे लोगों का चरित्र सर्वसाधारण को भली भांति नहीं विदित होता। जिन्होंने बरसों स्कूल में पढ़कर बड़े २ पद प्राप्त किये हैं वे भी बहुधा नहीं जानते कि हमारे देश में कब किस समय कौन २ उत्साही वीर, पतिप्राणा स्त्री-रत्न एवं सुसिद्ध कवीश्वर हुए हैं अथवा हैं और इस प्रकार का ज्ञान न होने से देश में मनुष्य जीवन को सुशोभित करनेवाले सद्गुणों का पूर्ण रूप से प्रचार होना दुर्घट है। इस अभाव को दूर करने की इच्छा से देशभक्तों और विद्यारसिकों की सेवा में हमारा सविनय निवेदन है कि जो सज्जन भूतकाल के तथा वर्तमान समय के वीर पुरुषों, पतिव्रता स्त्रियों और कवियों का हत्तान्त जानते हों वह कृपा करके हमारे पास लिख भेजें तो भारतवर्ष का बड़ा उपकार होना संभव है। इस देश में ऐसा स्थान विरलाही होगा जहां सौ पचास वर्ष में इधर उधर किसी न किसी घराने में कोई न कोई जाति और देश को भूषित करनेवाले पुरुष अथवा स्त्री ने जन्म ग्रहण न किया हो। उन लोगों का चरित्र एकत्रित करने में प्रचलित गीतों और कविताओं (जो दिहात के स्त्री पुरुष बहुधा गाया करते हैं) तथा वृद्ध लोगों से बहुत कुछ सहायता मिल सकती है। पर इस प्रकार की बातें संग्रह करना एक दो मनुष्यों का काम नहीं है इस से सहृदय मात्र को हम पर कृपा कर के देश के कल्याण साधनार्थ परिश्रम कर के लिख भेजना चाहिये कि किस जिले परगने के किस नगर अथवा ग्राम में किस संवत में किस कुल

के मध्य किस साहसी व्यक्ति ने जन्म लिया, उस के माता पिता का नाम क्या था और किस २ के उपदेश से कब २ किस २ के प्रति कहां २ अपने अलौकिक गुण का प्रकाश किया। योंही कब कहां किस गृह में किस के गर्भ से किस पतिव्रता का प्रादुर्भाव हुआ और किस वंश के कौन से बड़भागी के साथ व्याही गई तथा क्योंकर पवित्र प्रेम का परिचय दे कर जीवन-यात्रा समाप्त की एवं उस का सतीचौरा किस स्थान पर है। इसी प्रकार कब कहां किस कुल में किस कविवर ने जन्म धारण किया किस राजसभा अथवा किस रीति से निर्वाह किया वा करते हैं कौन२ से ग्रंथ निर्म्माण किये उन ग्रन्थों की पूरी प्रति अथवा कुछ कविता भी लिख भेजनी चाहिये। यदि संभव हो तो उन का चित्र और हस्तलिपि भी भेजने तथा लिखवाने का यत्न कर्त्तव्य है। शिवसिंह सरोज में जिन २ कवियों की कविता लिखी है उस के अतिरिक्त कुछ और विशेष ज्ञात हो या अन्यान्य कवियों का चरित्र अवगत हो तो लिखना चाहिये। आल्हा, लोरिका, विजयमल्ल, नयका बनिजरवा, गोपीचन्द, भरतरी, अमरसिंह का ख्याल, सती चन्द्रावली का गीत इत्यादि एवं इसी प्रकार के और और गीत, कवित्त, पमारा आदि से बहुत कुछ सहायता मिल सकती है। जो देश हितैषी ऐसी २ बातें लिख भेजने का उद्योग करेंगे तथा जो सम्पादक महाशय इस विज्ञापन को अपने पत्र में कुछ दिन स्थान दान करेंगे उन को धन्यवाद हम क्या समस्त भारत देवेगा किन्तु एतद्विषयक पुस्तक (वा पुस्तकें) भी उन की सेवा में बिना मूल्य भेजी जायगी। बुद्धिमानों को इतनी सूचना बहुत है। हां जो २ बातें रह गई हों वह और भी बढ़ाकर

लिखना उन की कृपा है इसे पढ़ कर के रख न दीजिये किन्तु ध्यान दीजिये और परिश्रम कीजिये जो बस " सुभाप यहसां करी खुल्काप एहसां होगा " ।

विशेष जिस ग्राम में प्रान्त में जन्म हो उस का नाम क्यों पड़ा यदि यह मालूम हो तो सो भी लिखना वा किस वर्ण के कौन विभाग तथा मत मानते हैं यह भी मालूम हो तो लिखना चाहिये

हिन्द हिन्दी और हिन्दुस्तानियों का कीर्त्तिवर्द्धनाभिलाषी

माहवप्राद सिंह

मैनेजर खड्गविलास प्रेस ।"

आप ने इस विज्ञापन के साथ जो पत्र अपने इष्टमित्रों तथा अपर उत्साही पुरुषों को भेजा था उसे भी मैं उद्धृत करता हूं—

"कृपानिधान जो विज्ञापन इस पत्र के साथ जाता है उसे अपने यहां के कवि भांट चारण पण्डित दानाध्यक्ष वा गुणीजन को जो कविता करते हों वा जो इतिहास जानते हों उन्हें दीजिये कि जो कुछ विज्ञापन में लिखा है उसे पूरा करके भेज दें। और आप के यहां से जो कुछ पुराचीन काल में वा इस समय में कवियों को भूमि आदि मिली हो उस का वृत्तान्त भी कृपा कर लिखवा कर भेजिये इस के सिवाय आप के आस पास में जो ऐसे मनुष्यों का वृत्तान्त और लोग जानते हों उन्हें भी संग्रह कर भेजवाइये और पत्र के उत्तर में यह लिखिये कि विज्ञापन के अनुसार कब तक इस का वृत्तान्त आप के यहां से आवेगा।

आप वा आप के पुरुषे वा इष्ट मित्र गुरु के वर्णन में कोई कुछ कविता किया हो तो उस कविता को और कवि के नाम को भी भेजिये। दानाध्यक्ष से इस बात में बड़ी सहायता

मिलेगी क्योंकि कवियों की बिदाई का साल संवत् तारीख और क्या बिदाई मिली थी ये बातें मालूम हो जायंगी। इस से वह कवि कब वर्त्तमान था और किस नरेश के यहां से क्या मिला—यह सब पूरे तौर पर मालूम होंगे।

कौन समस्या आप के यहां से दी गई थी और वे क्या उत्तर दिये थे इन सब बातों का भी वृत्तान्त ज्ञात हो तो लिखिये।

कई सौ कवियों का जीवनचरित्र हस्तगत हुआ है अब शीघ्रता कीजिये न तो फिर छापने का समय शीघ्र आ जायगा॥"

बहुत से लोग ऐसा कह सकते हैं कि ये सब बातें बाबू रामदीनसिंह के उद्योग से होती थीं। परन्तु एक तो यह, कि जब ये दोनों आदमी दो काया और एक प्राण के समान थे तो यह कहना कठिन है कि कौन कार्य्य किस के उद्योग से हुआ; दूसरे, बाबू रामदीन सिंह एक बार कहते थे कि "हिन्दी भाषा पर बाबू साहिबप्रसाद सिंह का कितना प्रेम है, मैं कह नहीं सकता। मेरे पीछे में भी हिन्दी के फटे चिटे ग्रन्थों के लिए सैकड़ों मुद्रा देना इन्हीं का काम है; जितने कवि पंडित हैं प्रायः सबों से इन को जान पहचान और पत्रव्यवहार है।"

इस में संदेह नहीं कि इस प्रान्त में हिन्दी साहित्य का तन मन धन से सब प्रकार से प्रचार करनेवाला इन दोनों आदमियों से बढ़कर दूसरा नहीं हुआ।

यह बात ऊपरही कही जा चुकी है कि बाबू साहिबप्रसाद सिंह यंत्रालय के प्रबन्ध में बड़े ही दक्ष थे और इस काम में भारतवर्ष में बहुत कम आदमी इन के समकक्ष थे। यह इन्हीं की कार्य्यदक्षता तथा उद्योग का फल था कि "खड्गविलास" यंत्रा

लय द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की प्रशंसा विलायत तक फैल गई थी और इस की उन्नति का डंका विलायती समाचार पत्रवालों ने भी बजा दिया था। एक बार "होमवर्डमेल" (The Homeward Mail)* ने जो इस यंत्रालय के विषय में लिखा था वह भी यहां पर उद्धृत कर दिया जाता है जिस में पाठकवृन्द स्वयं विचारें कि हमारा कथन कितना ठीक है।

"हिन्दुस्तान में विद्योत्साहिता की लहर पूर्व दिशा से पश्चिम की ओर अति शीघ्रता से जा रही है। अंगरेजों के प्रभाव से देशीय विद्या का पुनरुत्थान पहिले पहल बंगाल प्रदेश में हुआ और पश्चिमीय शिक्षा की भी पहिले वहीं जड़ जमी। किन्तु यह कहते आश्चर्य्य होता है कि यद्यपि अंग्रेजी भाषा और साहित्य को सर्व प्रकार का उत्साह प्रदान कियागया तौ भी बंगलाभाषा अपनी पश्चिमीय प्रतिद्वन्द्वी की बराबरी करने को द्रुतगामी हुई और गत ४० वर्ष के मध्य में एक सचमुच उत्तम

---

* The wave of literary activity seems to be travelling from east to west in India with considerable rapidity. Oriental learning was revived first in Bengal under English influence, and there also Western learning first took its root. Strange to say, although every encouragement was given to the English language and literature yet the vernacular Bengali hastened to keep pace with its Western rival, and a really valuable vernacular literature has been called into existence during the last forty years. The wave of intellectual light is now passing westward, and we find the press of the contiguous province of Bihar is becoming year by year more active and more worthy in its literary production. Foremost among the pioneers of progress is the Khadga Vilas Press, at Bankipore which sends forth with startling rapidity a series of works in the Hindi language, steadily rising higher in the scale of improvement.

The Homeward Mail, London, July 6, 11, 1885.

देशीयसाहित्य की स्थिति होगई। मानसिक ज्योति की लहर अब पश्चिम की ओर जा रही है और हम लोग देखते हैं कि निकटवर्ती सूबेबिहार का प्रेस प्रतिवर्ष साहित्यरचना में अधिकतर उद्योगी हो रहा है और अधिकतर योग्यता प्राप्त कर रहा है। उन्नति के पथप्रदर्शकों में बांकीपुर का 'खड्गविलास यंत्रालय' बहुत अग्रसर है जो कि आश्चर्य्यजनक वेग के साथ हिन्दी भाषा की पुस्तकावली प्रकाश कर रहा है जो पुस्तकें उन्नति की तुला में बराबर बढ़ती जाती हैं।"

संसार में उन्नति तथा सुख्याति लाभ के लिए मनुष्य में सुन्दर स्वभाव, साहस, मानसिक स्वतंत्रता, सद्व्यवहार, सदाचार इन कई गुणों का भी होना परमावश्यक है। इन्हीं गुणों से सम्पन्न लोग किसी विषय में क्यों न हो कृतकार्य्य होते हैं और सम्मानपूर्वक एक समान जीवन व्यतीत करते हैं। साहिब प्रसाद सिंह की विद्यानुरागिता और कार्य्यदक्षता का तो पाठकों को कुछ परिचय मिल गया होगा अब इन के शील स्वभाव की भी कथा सुनिए।

इन का व्यवहार कपटरहित था। जैसे ये निज स्वामी के साथ सद्व्यवहार तथा प्रेम रखते थे, प्रेस के कर्म्मचारियों के संग भी इन का बड़ाही शिष्ट बर्ताव था। काम लेने में कड़े और दाम देने में खरे थे। इसी से प्रेस के कर्म्मचारीगण इन पर मोहित रहते थे और इन के क्रोधित होने पर भी दम मार कर या तो मौन भाव से स्व कार्य्य में तत्पर हो जाते वा कुछ काल के लिए इन के सामने से हट जाते। क्रोध इन्हें व्यर्थ नहीं होता था। कार्य्य भ्रष्ट ही होने पर इन का रोषानल भभकता था;

नहीं तो ये कर्म्मचारियों को अपने परिवार के समान प्यार करते थे। दिन में कई बार सबों के साथ कुछ आमोदजनक बातें करते, कभी उन सबों की गृहस्ती का हाल पूछ कर आवश्यकता होने से उन की सहायता करने में तत्पर होते थे। इन का इतना बड़ा रोब दाब था कि बाहरवालों का भी कभी ऐसा साहस नहीं होता था कि इन के तुच्छ से तुच्छ कर्म्मचारी के साथ भी चूं कर सकें।

एक बार प्रेस का एक आदमी बाज़ार गया था। न जाने क्यों, उस से एक बाज़ारवाले से बिगड़ा और बाज़ारी आदमी ने प्रेस के उस आदमी पर दो एक धौल जमा दिया। उसे यह ज्ञात नहीं था कि वह प्रेस का आदमी था। जानता तो ऐसा साहस न कर सकता। प्रेस का एक दूसरा आदमी यह देख कर चट वहां पहुंच गया और वे दोनों मिल कर उस व्यक्ति को मारते घसीटते प्रेस में पकड़ लाए। उधर उस व्यक्ति का एक सम्बन्धी पुलिस को लाने चला गया। पहिले तो इन्हों ने उस व्यक्ति को छोड़वा कर आश्वासन दे कर उसे घर लौटा दिया और अपने आदमियों के बर्ताव की बड़ी निन्दा की और उन लोगों को बहुत धिक्कारा। इतने में पुलिसवाले आ धमके पुलिस का रूप देखतेही ये बर उठे। पहिले पुलिस को भी बहुत समझाया, परन्तु पुलिसवाले अपना ठाट दिखला कर इन का तथा प्रेस के कर्म्मचारियों का इज़हार लेने का हठ किया। तब ये आग भभूका हो गए और उन लोगों को ऐसा नीचा दिखलाया कि अन्त में किसी का इज़हार न होने पाया और उन लोगों को अपना सा मुंह लिए प्रेस से घसक ही जाना पड़ा।

औरों को कौन कहे स्वयं म० कु० रामदीन सिंह जी इन की रोषानल का धधक सहन करने को समर्थ नहीं होते थे। जब कभी ये रामदीन सिंह जी पर रोष करते उस समय वे चुपचाप हाथ में पुस्तक लेकर कहीं बाहर चले जाते थे। परन्तु उस समय भी बच्चों को ये हर्ष से क्रोड़ में लिए लाड़ प्यार करते थे। यह रोष इन्हें बाबू साहिब के किसी को अधिक द्रव्य दे देने पर होता था।

क्रोध की यह दशा होने पर भी आप का चित्त कोमल था। दुःखियों का दुःख देख कर इन्हें बहुत क्लेश होता था और यथासाध्य उन के दुःख निवारण में यत्नवान होते थे। मित्रों का क्लेश तो यह निज क्लेश से भी अधिक समझते थे। मित्रों के साथ ये किस प्रकार सहानुभूति करते थे सो सुनिये—हमारे पुत्र बाबू व्रजनन्दन सहाय (जो अब कुछ दिनों से आरे में वकालत करते हैं) १२।१३ वर्ष की अवस्था में एक दिन घर से भाग गए। कचहरी से आने पर हम को यह समाचार ज्ञात हुआ। सायंकाल तक इधर उधर खोजते रह गए पर कहीं पता न लगा। साहिबप्रसाद सिंह यह समाचार पाते ही चट हमारे डेरे पर पहुंचे और हमारे परिवारवालों को धीरज देकर आप ने कहा कि "आप लोग चिन्ता न कीजिए, मैं व्रजा को खोज-लाता हूं।" यह कह कर आप उसी दम बनारस की ओर रवाने हुए। मोग़लसराय में व्रजा को पकड़ा। वहीं से हमारे पास तार भेज कर आप उन को लेते हुए बनारस गए, और पं० राम शङ्कर व्यास जी के घर पर उन्हें ले जा कर और देवताओं का

दर्शन करा और शहर दिखला कर दो तीन दिन के बाद पटना लौटे। खर्चा का नाम लेते बोले "बस नाम न लीजिए।"

एक बार हमारे डेरे पर कोई नहीं था, हम भी शहर गए थे, उसी अवसर में हमारे डेरे के एक पासवाले मकान में आग लगी। आप ने हमारे चचेरे भाई प्रिय हरनन्दन, मुनसिफ़ी के शिरिश्तेदार के साथ (जो दूसरे डेरे में रहते थे) प्रेस के आदमियों को भेज कर हमारे डेरे की सब चीज़ों को जो हटाई जा सकती थीं, ताला तोड़वा कर हटवा दिया। शहर से आने पर घर खाली पाया और प्रतिवासियों से ज्ञात हुआ कि सब वस्तु छापेखाने में चली गईं।

इन का ऐसा बर्ताव केवल हमारेही साथ नहीं था, सब मित्रों के साथ था। नौकरों के वर्तमान रहने पर भी ये मित्रों की सेवा स्वयं करने को तत्पर हो जाते थे। साधु महात्माओं के तथा कवि कोविद के तो बिना मोल के दास थे। और समय कुसमय आने पर वे लोग इन की सेवा का बहुत भरोसा रखते थे।

बाबा हरनारायण दास नाम के एक नानकशाही उदासीन साधु कई वर्षों तक प्रेस में रहते थे। यों तो जितने अच्छे साधु महात्मा आते थे बिना कुछ न कुछ दिन रहे जाने नहीं पाते थे। उस में वे रामायण के विशेष प्रेमी थे। इस से अधिक दिन रह गये। बाबू रामदीन सिंह जी को रामायण के विषय में सदा वाद विवाद करना बहुत ही प्रिय लगता था। प्रेस के लोगों के सिवाय शहर के कितने अच्छे मुसलमान भी बाबाजी से बहुत ही प्रेम रखते थे और उन की सेवा करने को तत्पर रहा

करते थे। उसका कारण यह था कि वे किसी मतसे द्वेष न रखते थे और बातें उन की ऐसी मीठी थी कि उन के विरोधी को भी इच्छा होती थी कि कुछ देर उन से बात कर लूं। इसी से उन का व्याख्यान और रामायण की कथा बहुतही मधुर होती थी। पीछे वे पटना मोगलपुरा मुहल्ला में रहने लगे थे और वहीं १८०३ ई० में उन का स्वर्गवास हुआ।

एक बार वे ज्वरादि रोग से विशेष दुःखी हुए, यद्यपि सब कोई तो मामूली तरह से उन पर ध्यान रखतेही थे पर वे रह रह कर मैनेजर साहब को ही पुकारा करते थे और ये बार२ जा कर उन को सन्तोष करा कर आवश्यकीय कार्य्य कर दिया करते थे। इतने कार्य्यों के रहते ऐसा काम करना इन्हीं का काम था।

भारतवर्षीय विद्वानों में प्रसिद्ध, शीलनिधि, निखिलशास्त्र निष्णात श्री स्वामी बालराम शास्त्री उदासीन जिस समय अपना ग्रन्थ योगदर्शन छपवाने और लिखने के हेतु यहां ठहरे थे साहबप्रसाद सिंह गुरु से बढ़कर उन की सेवा में तत्पर रहते थे। यहीं रह कर उन्होंने संपूर्ण योग सूत्र का हिन्दी भाष्य लिखा और उसे खड्गविलासही में छपवाया। उसी समय स्वामी आत्मस्वरूपशास्त्री ने वेद के प्रमाणों के द्वारा दयानन्दी के कई एक सिद्धान्तों का खंडन करते हुए "दयानन्द दण्डो तुण्डदण्डः" वा "अबोधध्वान्त मार्तण्डः" ग्रन्थ तथा "अमूल्यरत्न" लिखा और प्रकाशित कराया। उक्त महात्मा वेद वेदांग के भारी ज्ञाता एवं सुप्रसिद्ध वक्ता थे। साधुओं की मंडली साथ लिए सिंधादि प्रदेशों में भ्रमण करते और धर्मोपदेश से लोगों को कृतार्थ किया करते थे। उन की

विद्वत्ता देखकर पूर्वोक्त बाबू भूदेव मुखोपाध्याय वर्षों उन के साथ रहे और अपने विल में लिख गए हैं कि "स्वामीबालराम जी को धर्मग्रंथ प्रकाशार्थ मेरे धन से यथोचित साहाय्य दिया जाय"। आप के साथ सैकड़ों अच्छे २ विद्वान, पंडित और महात्मा रहते थे। पर बड़े शोक की बात है कि गत वर्ष कुम्भ के मेला के समय तीर्थराज प्रयाग में उन का स्वर्गवास हो गया जिस से सनातन धर्म्म की भारी क्षति हुई।

इसी प्रकार पण्डित मुकुन्दराम भट्ट जिन्हें डा० ग्रियर्सन साहब ने " काश्मीर शब्दामृत " नामक काश्मीरी व्याकरण छपवाते समय प्रूफ़ संशोधन आदि के लिये काश्मीर से बुलाया था, 'महाराष्ट्र देशीय पूर्वोक्त प्रसिद्ध पंडित दामोदरशास्त्री, पण्डित अम्बिकादत्त व्यास, पण्डित रामशंकर व्यास जो आज कल सरहरी ज़िला गोरखपुर में मैनेजर हैं, पटना बाकरगंज के सुख्यात महंत महात्मा भीष्मदास जी, सीतामढ़ी के वैदेहीशरण जी, तथा स्वामी आत्माराम जी आदि सब ही के साहिबप्रसाद सिंह सेवक और स्नेहभाजन थे। और जब कभी उन लोगों से तथा अन्य साधु महात्माओं से इन्हें मिलने का अवसर मिलता तो ये उन लोगों के संग भगवतसम्बन्धी चर्चा में अधिक समय व्यतीत करते थे। परन्तु भंड साधुओं में तथा वंचक ब्राह्मणों में इन की श्रद्धा नहीं थी। उन्हें देखकर चिढ़ जाते थे। स्वयं भी दिखलाने के लिए पूजा पाठ नहीं करते थे। हम ने इन्हें कभी पूजा पाठ करते देखा भी नहीं। यह शिष्य नहीं हुए थे और कहते थे कि जब एक से गायत्री मंत्रका उपदेश ले लिया तो फिर किसी दूसरे से शिष्य होना क्या? बाबू रामदीन सिंह का भी यही

सिद्धान्त था। परंतु सुनते हैं कि शरीर त्याग करने के दो सप्ताह पूर्व जब ये रेपुरा जाते थे जिसका सविस्तार वर्णन आगे होगा, तब कदाचित इन्हों ने महात्मा वैदेहीशरण जी से कहा था कि "उधर से अयोध्या जायंगे क्योंकि महात्मा जानकीवरशरण जी से शिष्य होने का विचार है।" इनके चित्त में ऐसा परिवर्त्तन क्यों हुआ था इस का कारण दूसरा कौन कह सकता है? परन्तु रेपुराही जाकर ये अस्वस्थ हो गए, अतएव वहां नहीं जा सके। इन की साधुता तथा अतिथिसत्कार एवं शील स्वभाव के वर्णन में हमें जो दो कवितायें मिली हैं उन्हें हम यहां पर उद्धृत कर देते हैं। इन में अत्युक्ति से काम नहीं लिया गया है। वरन इन का सच्चा चित्र खींचा गया है।

शिवहर्ष कवि कहते हैं:—

"द्वार पै ठाढ़ लखैं जबहीं तबहीं उठि दौरत आतुर ह्वै के।
सासन दै सब दासन को निज जाय बिछावत आसन लै कै॥
भोजन दै मनइच्छित को पुनि इच्छितपुस्तक द्रव्य सुदेकै। त्यों
शिवहर्ष कहै सबसंत मनेजर गे सुभ कीरति कै कै॥

अख्तियारपुरनिवासी पूर्वोक्त बाबू ब्रजनन्दन सहाय लिखते हैं:—

"तेरो सुभाव सुसील अरु मरजाद को कौन उचारि बड़ाई।
जाचक केते अजाचक भे तव गावत दान दया की बधाई॥
यौं ब्रजवल्लभ मित्रन सों कर नेह निबाह बसे अमराई।
तेरि सुकीरति फैल रही चहुं ओरन में करचन्द की नाईं॥

ये बड़े साहसी और भयरहित थे। जिन कामों के करने में बहुत से लोग आगा पीछा करते और सोचते विचारते ही रह

जाते थे उन कामों को भी ये बिना किसी की सम्मति लिए निधड़क कर बैठते थे और ईश्वरकृपा से उन सबों में कृतकार्य्य भी हो जाया करते थे।

किसी कारखाने के प्रबन्धकर्त्ता को उत्तम रीति से काम चलाने के लिए व्यवहार में सच्चा और परिपक्व होना बहुत आवश्यक है। सो ये दोनों ही में पूरे थे। लेन देन में ये खटपट रखना नहीं चाहते थे और किसी को कडुई लगे वा मीठी ये कोई बात स्पष्ट कह देने में संकुचित नहीं होते थे। इसी से जो लोग इन के चित्त का भाव नहीं जानते थे वे कभी २ इन की निन्दा भी कर बैठते थे। परन्तु इन का नित्य का यह सिद्धान्त था "स्पष्टवक्ता सुखी भवेत्।" इन के और भी अनेक सिद्धान्त थे, यथा—

(१) किसी को यथासाध्य अप्रसन्न न करो। (२) व्यवहार में खरी रहो। (३) ईमान्दारी से काम करो। (४) सबों से प्रीति रखो। (५) बहुत कम लोगों का विश्वास करो।

निस्सन्देह इन के ऐसे सिद्धान्त होने ही से ये अपने को तथा "खड्गविलास" कारखाने को इस अवस्था पर पहुंचाने को समर्थ हुए थे। इन सिद्धान्तों का अवलम्बन करने के अतिरिक्त ये एक नीतिज्ञ पुरुष भी थे। इन की नीतज्ञताही का यह फल था कि सब कर्मचारी इन के वशवर्त्ती बने रहते थे और एक तिनका भी इधर उधर नहीं डोलने पाता था। घरवालों को कौन कहे बाहरवाले भी परस्पर के विवाद की निष्पत्ति इन के द्वारा कराने आते थे और इसी नीति के बल से ये समय आने पर शत्रुओं को भी मित्र बना लेते थे।

परन्तु संसार में मनुष्य कैसाही विज्ञ, बली, निडर, निपुण और नितिज्ञ क्यों न हो, मृत्यु के सामने किसी का कोई गुण काम नहीं करता। उस के सामने बड़े २ वीर योद्धाओं को भी हारही मानना पड़ता है, महाप्रतापी महिपालों को भी मस्तक अवनत ही करना होता है और चतुर चूड़ामणियों को भी "चूं" करने का साहस नहीं होता। नहीं तो, विद्या, सभ्यता वीरतादि सद्गुणों का जन्मस्थान और प्राचीन सब देशों का गुरु भारत-वर्ष, इतिहासप्रसिद्ध रोम और यूनान, पिरेमिडप्रदर्शक मिश्र की क्या यही गति होती जो आज देखने में आती है? नहीं तो, जिन लोगों के विद्यारत्न प्रकाश से आजभी संसार आलोक-मय हो रहा है, क्या उनकी झलक भी कहीं नहीं देखपड़ती? नहीं तो, भूमंडल के प्रत्येक खंड के महावीरों को, जिन के भय से संसार कंपित रहता था, क्या आज कहीं अस्ति भी नहीं दृष्टिगोचर होती? नहीं तो, उन नरेशों का, जिन का प्रताप सूर्य्य के समान देदीप्यमान था, क्या आज स्वप्न में भी कभी दर्शन नहीं होता? आज जगद्विख्यात धर्मप्रचारक कृष्ण, बुद्धदेव, महम्मद, ईसा कहां? आज, राम, रावण, रघु, दधीचि, सिकंदर, दाराशिकोह, वाशिंगटन, नेपोलियन इत्यादि कहां? हमारे बड़े २ योगिराज, पैग़म्बर, सेंट कहां? हा! काल तेरा प्रताप अकथनीय और अपार है "न गोरेसिकन्दर, न है क़ब्रदारा। मिटे नामियों के निशां कैसे कैसे।" यह तेरी ही लीला का प्रभाव है। बस जिस काल ने न जाने कितने धीर वीर, कवि कोविद चतुर नीतिज्ञ का कलेवा किया उस के सामने एक यंत्रालय के एक प्रबन्धकर्ता की क्या गणना थी। साहिबप्रसाद सिंह को भी मौन होकर उस कुटिल काल की आज्ञा माननी पड़ी।

१९०१ ई० का श्रावण का महीना था। बाबू रामदीनसिंह के ग्राम रेपुरा का बलिया में मुकद्दमा था, उस समय इन का वहां उपस्थित होना बहुत आवश्यक था, परंतु बलिया में प्लेग का वेग था। बाबू रामदीन सिंह नहीं चाहते कि ये ऐसे समय बलिया जायं। परन्तु काम का बिगड़ना साहिबप्रसाद सिंह कब देख सकते थे। कामही करना तो ये अपना काम समझते थे। किसी का कहना कुछ काम नहीं आया। ये बलिया गये। २ सप्ताह के लग भग वहां ठहर कर पटना लौट आए और वहां के लोगों से कहते आए कि एक सप्ताह में पुनः रेपुरा आवेंगे। इनका विचार था कि कुछ फ़ार्म छपवा कर रेपुरा के लोगों पर अभियोग उपस्थित करें। परन्तु बांकीपुर आने पर दूसराही मामिला हुआ। सूर्य्यका दिन (रविवार) गया, चन्द्र का दिन (सोमवार) गया, मंगल का अमंगल दिन आ पहुंचा। यह एकादशी के बाद द्वादशीपारण का दिन था।

सीतामढ़ी निवासी महात्मा वैदेहीशरण जी भी उस दिन यहां उपस्थित थे। आप सनातन धर्म्म प्रचार में बड़े तत्पर रहते हैं। आज कई वर्षों से जगत्प्रसिद्ध भारतवर्षीय अद्वितीय सोनपुरमेला में (जो बिहार प्रान्तमें गंगा गंडक के संगमके निकट हरिहरक्षेत्र में पन्द्रहियों रहता है और जहां, देश देशान्तर से हाथी घोड़ों से लेकर साधारण वस्तु तक बिकने को आती हैं) आपही के उद्योग से सनातन धर्म्म की सभा हुआ करती है। आप "खड्गविलास" प्रेस में प्रायः दर्शन दिया करते थे और अब भी इस पर वैसी ही कृपादृष्टि रखते हैं। साहिबप्रसाद सिंह ने उन से कहा कि द्वादशी का फलाहार करमी शाक से करना

चाहिए। उन की सादर कारमी का शाक दही तथा अन्य ब्राह्मणों को बहुएं भोजन करायी। यंत्रालय के सब कर्म्मचारियों को बैठाकर खूब खिलाया। एक ने कहा कि "अब हमलोग भोजन कर चुके आप भी यहो भोजन कोजिए"। इस पर इन्होंने कहा अच्छा "तब सफेद ज़हर भो दो"। दही को ये प्रायः सफेद ज़हर ही कहते थे। लोग हंसने लगे। परन्तु यह सचमुच भविष्य वाणी हुई। दही खातेही इन के पेट में कुछ पीड़ा आरम्भ हुई, और सायंकाल को प्रबल ज्वर चढ़ आया। बाबू रामदीनसिंह यह रंग देख कर व्यग्र हुए, चित्त को क्या गति हुई यह केवल अनुभव ही से जाना जाता है। इन को शय्या के निकट जा बैठे वहीं वे बराबर बैठे रहे।

मंगलकी रात बीती, बुध आया। इन को शय्या परिवर्त्तन को गई। देखने में तो यह अच्छे प्रतीत होते थे। परन्तु बांकीपुर के सुप्रसिद्ध हकीम नसीर साहिब ने नाड़ी से इन का रोग पहचाना, रंग बेरंग देखा और कहा कि अच्छी आशा नहीं मालूम होतो, इनका बचना कठिन है। बुध इसी प्रकार बीता। बृहस्पति के भोर ही से रंग बेरंग हुआ। कितने हकोम, वैद्य, कविराज, डाक्टर आए और सिविलसर्जियन भी आए, परन्तु कोई औषधि फलीभूत नहीं हुई, किसी का कुछ वश न चला। प्रबल काल ने अपना हाथ फेरा था। फिर दवा क्या कारगर हो? कान से कम सुनाई पड़ने लगी, बोलने की इच्छा होती थी परन्तु कंठ-कफ हो रहाथा, वाक्य नहीं निकलता था। आज जब रामदीनसिंह जो इन के निकट से क्षणमात्र भी हटना चाहते थे

तो ये उन की बांह पकड़ लेते और अपने निकट बैठाते थे। किन्तु मन का भाव, वियोग का शोक अथवा प्रेस की प्रबन्ध आदि के विषय में कुछ नहीं कह सकते थे। रामरणविजय सिंह को पास बुलाया परन्तु जब उन से कुछ वार्तालाप की सामर्थ्य नहीं देखी तो अश्रुधारा प्रवाहित करके निज हार्दिक प्रेम सूचित करने लगे। बाबू रामदीनसिंह के दोनों छोटे लड़के श्रीशारंगधर तथा रामजी को भी बुलाया और देखकर शीघ्रही लौटा दिया। गीता आदि का पाठ होता रहा गोदान, वस्त्रदान, पुस्तकदानादि सब कुछ हुआ। श्रीसीताराम की मूर्ति को कुछ काल देखते २ आपने ४ बजके १४ मिनट पर आंखें बन्द कर लीं, प्राण पखेरू काया रूपी पिंजड़ा से निकल गया। कहां गया, कैसे गया, किसी ने नहीं देखा। चारों ओर हाहाकार मच गया। साहिबप्रसादसिंह जी को आज न तो यंत्रालय के कार्य्यों का ध्यान रहा, न अपने परम स्नेही रामदीनसिंह के हितसाधन का ध्यान रहा, न हिन्दी की सेवा की सुधि रही और न रामरणविजय सिंह को लाड़ प्यार का विचार रहा। सबों से मुख मोड़ कर संसार से चल बसे। इन के देहान्त से बाबू रामदीनसिंह की जो गति हुई वह अकथनीय है। इनका मानों एक अलंग टूट गया। इस शोक को वह बहुत दिन सहन नहीं कर सके और जब तक जीवित रहे इन के वियोग सोग से सदैव संतप्त रहे।

इन की जीवितावस्था में जब कभी बाबू रामदीन सिंह इन का फ़ोटो खिंचवाना चाहते थे तो ये यही कहते थे कि "घबड़ाइए मत, मरने पर फ़ोटो खींचा जायगा।" वही बात हुई। बाबू साहिब ने इन का प्राण अवशेष रहतेही फ़ोटोग्राफ़र को

बुलाने के लिए कई आदमियों को भेजा था, परन्तु इन का देहान्त हो जाने पर फ़ोटोखींचनेवाला आया।

ज़िला मुज़फ़्फ़रपुर गंगेया निवासी शिवशंकर सिंह भूमिहार ब्राह्मण तथा बभनौली ज़िला आरा निवासी गोविन्दशरण तिवारी यंत्रालय के दो कर्मचारियों ने जिन पर इन की विशेष प्रीति रहती थी दोनों ओर से इन की बांहे पकड़ कर मृतक शरीर को आसीन किया, माथे में रामनामा बांधागया और पीतांबर ओढ़ाया गया। इसी अवस्था में इन का फ़ोटो खींचा गया।

कचहरी से लौटते समय इसप्रबन्धलेखक को राहमेंयह शोक-समाचार ज्ञात हुआ। प्रेस में पहुंच कर उस मित्र को, जिस का आनन हमें देखतेही प्रफुल्लित होजाता था, प्राणरहित पाकर क्षण-मात्र भी हम को वहां ठहरा न गया। वह सलोनो का दिन था श्रावण की पूर्णिमा को साहिबप्रसाद सिंह परिवा के चन्द्र के समान होगए।

इन को कोई पुत्र नहीं था। इन के भतीजे रामप्रसाद सिंह जो बाल्यावस्थाही से इन के संग रहते और आजकल बाढ़ फ़ौज-दारी में पेशकार हैं उस समय घर पर थे। अतएव इन के स्वग्राम निवासी बाबू कालीचरण सिंह के पुत्र रामचरण सिंह ने जिन्हें ये पुत्रवत् मानते थे, इन की अन्त्येष्टि क्रिया की और दूसरे दिन लोगों के रूपस जाने पर यह शोकसमाचार घरवालों को ज्ञात हुआ। इन के परिवार की क्या दशा हुई, यह लिखने की बात नहीं पाठक स्वयं अनुमान कर सकते हैं।

जो हो, यह स्वर्ग गए परन्तु जगत में इन की कीर्त्ति विराज-मान है उक्त बाबू ब्रजनन्दन सहाय ने लिखा है:—

छप्पै—जब लगि भारत देस मांहि नागरि परकासा।
जब लगि सोहत भारतेन्दु नागरीअकासा॥
जब लगि अम्बादत्त प्रतापनरायन कविवर।
श्रीदामोदर, लाल खड्गमल कीरति सुन्दर॥
है राजत भारतवर्ष मधं, व्रजबल्लभ भाषत, अवस।
रहि हैं साहिबपरसाद को रामदीनहरि युत सुयस॥

पटने में आप के मित्र को जो शोक था सो थाही अन्यान्य स्थानों से भी शोकप्रदर्शक तथा धैर्य्यप्रदायक कई एक तार और पत्र बाबू रामदीन सिंह जी के पास आये थे। इन के मित्रों को चिन्ता थी कि अब खड्गविलास का काम कैसे चलेगा और बाबू रामदीन सिंह की चिन्ता कौन दूर करेगा? परन्तु न किसी के हृदय में चिन्ताही चिरस्थाई होती और न संसार में कोई काम ही बे हुए रहता साहिबप्रसाद सिंह भी गए, बाबू रामदीन सिंह भी गए। ईश्वर कृपा से प्रेस खटाखट बराबर चलही रहा है और आशा है कि उसी की असीम कृपा से सुयोग रामरणविजय सिंहके सुप्रबन्ध से आगे भी चलताही जायगा और उत्तरोत्तर और उन्नति करताही जायगा।

इन का शोक प्रकाश स्थानीय अंगरेज़ी समाचारपत्र "बिहार टाइम्स" तथा "भारतमित्र" और "भारतजीवन" आदि कई एक समाचारपत्रों में छपा था। इस प्रबन्ध लेखक ने तथा इन के और मित्रों ने छन्द बद्ध इन का शोक प्रकाश लिखा था जिन में से कुछ अंश इस ग्रन्थ के अंत में प्रकाशित कर दिया जाता है।

साहिबप्रसाद सिंह का विवाह मुज़फ़्फ़रपुर ज़िला के नया-गांव में हुआ था। इन को कोई पुत्र नहीं हुआ यह बात ऊपर

ही कही जा चुकी है। किन्तु इन को दो कन्यायें हुई थीं जिन में से एक का इन के सामने ही देहान्त हो गया था और दूसरी अबतक वर्तमान है।

अब यहां पर बाबू रामदीन सिंह की सज्जनता, शीलता, दूरदर्शिता, सुहृदयता एवं कृतज्ञता का कुछ परिचय देना आवश्यक देख पड़ता है। बाबू साहिबप्रसाद सिंह तथा बाबू रामदीन सिंह में परस्पर कैसा प्रेम था यह बात अब पाठकों पर अविदित नहीं है। पाठकगण देख चुके हैं कि जीवित काल में एक के लिए दूसरा प्राणार्पण करने को उद्यत रहता था। निस्सन्देह यह बात अनेक अन्य लोगों में भी पाइएगा, परन्तु क्या केवल इसी से कोई सच्चा मित्र कहलाने का अधिकारी हो सकता है? सच्चा मित्र वही है जो अपने प्रेमी के उपकारों को उस के इस संसार से पयान करने के बाद भी न भूले; उस के परिवार के साथ, उस के बाल बच्चों के साथ प्रेम प्रदर्शित करे, उन के साथ उपकार करे, उन की भलाई की चेष्टा करे। परन्तु यह बात आज के मित्रों में बहुत कम देखी जाती है। जिस के साथ गाढ़ी प्रीति हो, जिस के साथ दमबदम प्रेम का दम भरते हों, जिस के लिए प्रतिक्षण जान निछावर करने को तैयार रहते हों, उस के इस लोक से प्रस्थान करने के अल्प ही काल के बाद यह भी नहीं याद करते कि वह कौन था, उस के परिवार की ओर दृष्टि करने की बात तो दूर रखिए। हो सके, तो उस की मृत्यु से कुछ निज लाभ उठाने में भी संकोच नहीं करें। मित्रों को बिलग रखिए, क्या हमलोग नहीं देखते कि आज निज सहो-

दर के स्वर्गयात्रा के अनन्तर उस के परिवार के साथ लोग कैसा निन्दनीय बर्ताव करने अथवा उस का सर्वस्व अपहरण करने में लज्जा को तिलांजलि दे देते हैं ? अतएव हम उसी को सच्चा, निष्कपट प्रेमी कहेंगे, उसी को मित्रों में उत्कृष्ट आसन प्रदान करेंगे, वरन उसी के लिए मित्र शब्द का प्रयोग करना सार्थक समझेंगे जो निज प्रेमी, निज शुभचिन्तक के प्रेम और गुणों को जब तक सांस चलता रहे स्मरण रखे और उस के परिवार के साथ उस का प्रतिफल देने में, उसका उपकार करने में, उस के साथ कृतज्ञता दिखलाने में कदापि त्रुटि नहीं करे। यदि उस के जीवितकाल में "मित्रक दुख रज मेरु समाना" हुआ तो क्या ? अब हम दिखलाते हैं कि साहिबप्रसाद सिंह के बाबू रामदीन सिंह कैसे प्रेमी थे। जीवित काल में यदि साहिबप्रसाद सिंह उनके दुखसे दुखित होते थे, भृत्यके अनुपस्थित रहने पर उन का मलमूत्र भी फेंकने को तयार रहते थे, तो रामदीनसिंह भी इन के दुख को अपना दुःख समझते थे और स्वामीपद धारण करने पर भी इनसे दबते थे। यदि साहिबप्रसाद सिंह रामदीनसिंह के हितसाधन के लिए उन के बरजने पर भी निर्भय रेपुरा चलेगए, जहां प्लेग की आग धधक रही थी तो रामदीन सिंह भी इन के शोक से हाय हाय करते थोड़ेही दिन के बाद रोग से शय्याशायी होकर इन का संग देने को स्वर्ग सिधारे। यहां तक तो परस्पर की प्रीति तुल्य भाव से प्रदर्शित हुई। परन्तु बाबू रामदीनसिंह ने अपने अकृत्रिम मित्र के बाल बच्चों के साथ भी भारी उपकार किया।

उन्हों ने निज सुजनता से यह विचार किया कि "यह हमारा धन केवल हमारा उपार्जित नहीं है; इस की वृद्धि के लिए मनेजर साहिब आजन्म तन मन से चेष्टा करते रहे; इस धन के न हम केवल भागी हैं और न हमारा सन्तानही अकेला भागी है, इस धन से हमारा सन्तान वैसाही सुख उठाने का अधिकारी है जैसा मनेजर साहिब का" यह विचार कर रामदिन सिंह ने निज कृतज्ञता प्रगट करने का बहुत सुन्दर और सराहनीय उपाय किया । यह बात ऊपरही कही जा चुकी है कि साहिब प्रसादसिंह की एक कन्या थी। उन का स्वर्गवास होते ही बाबू रामदीन सिंह ने संकल्प किया कि रामरणविजयसिंह का विवाह मनेजर साहिब की कन्या से किया जाय, यदि कुंडली से गणना ठीक न हो तो नामों से भी गणना ठीक की जाय।" बाबू साहिब ने केवल ऐसा संकल्पही नहीं किया वरन इस विचार से कि न जाने उनके पीछे क्या हो, यह कार्य्य स्वयं सम्पन्न हो कर देना उचित समझा। उस समय मगह के एक अगुआ आए थे जो रामरणविजयसिंह के विवाह के लिए कई सहस्र आय की ज़मींदारी आप को लिख देने को प्रस्तुत थे, परंतु बाबू साहिब अपने संकल्प से न हटे। वे अपनी कृतज्ञता में कब बट्टा लगानेवाले थे ? डुमरात्र महाराज के एक गोतिया भी इसी से अप्रसन्न होकर चले गये। धन्य हैं ऐसे मित्र और श्लाघ्य है उनकी सज्जनता । ऐसे ही लोग मित्र मंडली में उच्चासन के अधिकारी हैं, ऐसेही लोग सच्चे मित्र कहे सकते हैं।

बाबू साहिब चाहते तो बहुत सा तिलक लेकर अपने पुत्र

का विवाह अन्यत्र कर देते, परन्तु उन्हों ने केवल धर्म्म ही के ध्यान से, सच्ची मित्रताही के अनुरोध से यह शुभ कार्य्य सम्पन्न कर के अपनी सज्जनता एवं कृतज्ञता का परिचय दिया और जगत में सच्ची मित्रता का एक सुन्दर उदाहरण दिखलाया। गणना राशि के नाम ही से ठीक हुई। अब तक दोनों घराने में केवल प्रीति का नाता था, अब सम्बन्ध हो गया क्योंकि श्रीरामरणविजय सिंह का विवाह बाबू साहिबप्रसाद सिंह की कन्या ही से हुआ।

जगदीश्वर दोनों सज्जनों की कीर्तिरूपी यंत्रालयतरु सदा हराभरा रखैं और बाबू साहिब की कृतज्ञताकर्तृक आरोपित दम्पतिरूपी वाटिका सदा लहलहाती और सुखद-फल-फलती रहै।

साहिबप्रसाद सिंह के भाइयों में अब इन से बड़े बाबू चण्डीप्रसाद सिंह तथा सब से छोटे बाबू मनोहर सिंह वर्त्तमान हैं। बाबू चण्डीप्रसाद सिंह के पुत्र पूर्वोक्त श्रीरामप्रसाद सिंह हैं और मनोहर सिंह के पुत्र शिवप्रसाद सिंह हैं जो खड्गविलास यंत्रालय में रह कर विद्याध्ययन करते हैं। रामप्रसाद सिंह को भी दो पुत्र हैं उनमें से बड़ा खड्गविलासही में पढ़ता है।

अब बाबू चण्डीप्रसाद सिंह खड्गविलास प्रेस के प्रिन्टर और पब्लिशर हैं। बाबू रामदीन सिंह इन के साथ भी बड़ा स्नेह रखते थे। इन्हें भी विद्या में विशेष अनुराग है। क्यों न हो विद्यारसिक के वंशही में तो विद्यारसिक होते हैं। इन्हों ने वर्णविनोद और वस्तुविचार आदि कई एक पुस्तकें लिखी हैं।

१२ वर्ष से " विद्याविनोद " पत्र का यही सम्पादन करते

हैं। विद्याविनोद स्कूलों के छात्रों के लिए एक बड़ाही उपयोगी पत्र है।

शिक्षाविभाग के माननीय प्रधान से अनुमोदित होकर एवं अनेक लोकल और डिस्ट्रिक्ट बोर्ड से स्वीकृत होकर यह पत्र१२ वर्ष से प्रकाशित हुआ करता है और अपने ढंग का निराला पत्र है।

—०—

शोकप्रकाशक छन्द।

ग्रंथकर्ता लिखित।

किधर गये? हा! आज हमारे प्रिय मीत बर।
श्री साहिब प्रसाद सिंह सुठि सीलनेहधर॥ १॥
पूर्णचन्द्र लौं जस प्रकाश कै पूरनिमा को।
भये अचानक ग्रसित हाय कस कालराहु सौं॥ २॥
आय कालज्वर जबरदस्त तोहि हाय दबायो।
नहि नहि, मंडलमित्र माहि दुखमेघ घिरायो॥ ३॥
बज्रपात इव भो कलेशकर ब्योग तिहारो।
सबै नयन तें बरसत है अजहूं जलधारो॥ ४॥
कहत कामिनी "पीव कहा? हा! पीव कहा?" हैं।
कुहकत परिजन हो अधीर अति जहां तहां हैं॥ ५॥
कहा रही जो स्वर्गलोक अति आतुर धाये।
हिन्दी उन्नति काज कहा कोउ बोल पिठाये॥ ७॥
नव युवकन उर निरखि नेह निज भाषा प्यारे।
कै 'भुदेव' जू देन सुलभ उपदेस हंकारे॥ ८॥
जिन की अनुमति लेइ कियो हिन्दी उधार नित।
श्री युत बाबू रामदीन सिंह संग यथोचित॥ ९॥
कै कविन उपकार हेत कोउ लीन सुसम्मति।
काल खड़गमल निकट गये तुम अहो शीघ्र गति॥ १०॥
कै बाबू हरिचन्द बुलाये तुमहि नेह कर।
जाहि "कला" कर निकर प्रकाश्यो देश देशांतर॥ ११॥
रक्षाबन्धन दिवस जान कै श्री प्रताप जू।

"ब्राह्मन" दच्छिना काज बुलाये कहा आप कू ॥१२॥
श्री अँबिकादत व्यास गये जो अबहिं स्वर्ग कों।
मच्यो कहा पुनि शास्त्रार्थ तहं दयानन्द सों ॥१३॥
लिव्चर मुद्रन काज कहा तिन तुमहिं बुलाये।
फिर पूछत हौं कहो यार किहि काज सिधाये ॥१४॥
हम मित्रन की प्रीत सबै छिन मांहि भुलाई।
कहा? कहो किन हाय स्वर्ग सुधि ऐसी आई ॥ १५ ॥
नहि सोच्यो प्रिय मीत तिहारे रामदीनहरि।
तुव बिनु रहिहैं दुखी कहो कबहूँ एकौ घरि ॥ १६ ॥
तुम्हरी मीठो बात नेह भरि कबों भुलैहैं।
नहीं, नहीं, तुव सुरत करत अतिशय अकुलैहैं ॥ १७ ॥
कारज में अति निपुन; रोष अरु नेह सँग सँग।
रहत दिखावत, करत काज तुम सदा याहि ढँग ॥१८॥
हे साहिब! प्रसाद तिहारे रामदीनहरि।
हरी भरी कर दीन्ह ललित बाटिका सुनागरि ॥१९॥
पै अबहीं तिह मांहि सलिल सींचन रह्यो बाकी।
तुम ताकि सुरलोक रही सुधि कछुहुं न ताकी ॥२०॥
हिन्दी प्रेमिन मुख्य संग तुम आसन पाये।
हिन्दी-हित-कर नेम हिये नित देव सुभाये ॥२१॥
"शिव" बिनवत शिव पाहिं मिलै शिवधाम आप को।
परिजन धीरज शांति, शमन हो व्योग ताप को ॥२२॥
मीतवर्ग सों कहौं धरो धीरज सब भाई।
नहि लखिहो वह रूप रह्यो कितनो अकुलाई ॥२३॥
बरु सोचो मन सदा उड़त सिर कालसचानक।

ञाव लगी चट गई पखेरुप्रान अचानक ॥ २४ ॥
याते ईर्षा द्वेष मोह मद सबै भुलाई ।
रहो जगत मंहि करत काज, ध्यावत रघुराई ॥२५॥

बाबू पत्तन लाल (सुशील कवि) कृत ।

कवित्त ।

कहौ कौन कारज की सीघ्रता समानो हिये ? नसि उत्साह मेरे जहां के तहां गये । प्यारे 'हरिचन्द' औ 'प्रताप' ही समान तुमहू दगा दै सिधारे कहा ? तजि वे जहां गये ॥ ऐहैं कौन ऐहैं कहां जैहैं वे कहे न जैसे त्यौंही चुप चाप आपौ करि ना न हां गये । पूछत तुम्हीं सों अजू साहबप्रसाद सिंह छाड़ि हमलोगन अकेलहि कहां गये ? ॥ १ ॥

बांधि रामनामे को मुरैठो यह सीस खासो तिलक लगाय भाल माल गल धारे हौ । होत पाठ गीता इतै उतै विष्णु-सहसनाम आपो अबै राम राम बार कै उचारे हौ ॥ फोटो की तयारी जौ लौं होनहु न पाई तौ लौं ऐसी सीघ्रताई करि सुरपुर पधारे हौ । आप से न ऐसी आसा स्वप्न हू हमारी रही जैसी करि आप भये हम से किनारे हौ ॥ २ ॥

बिप्र हैं अनेक ठाढ़े लीने करमाहिं राखी दान अभिलाखी आज सुभग सलोनो है । बारि दृग ढारि ढारि बिहू बतराय रहे कैसो या अचानक ही होय गयो टोनो है ॥ आप को तो आप की दयालुता सुसीलता ते लहि जस ठैर आपै बन्यो लोक दौनो है । किन्तु हमलोगन को होनो बिनु आप कहा याही मन आनि आनि बार बार रोनो है ॥ ३ ॥

खड्गविलास रे क्यों ऐसे ह्वै उदास चले आदि ही सो याज लागी रुचि वा पै हाया है। बरन यही ते नाहि कुल परिवारन की छांड़ि चली सारी बिल दार तने माया है॥ कियो जो कियो सो अब कहिबी कहा है तासु स्वर्ग ही के बास जो तुम्हारे मन भाया है। जाय बसो सुख से न भूलि हमलोग जैयो वास हरि पास ह को कौन घट पाया है॥ ४॥

—•—

प्रतापगढ़ निवासी

श्री शिवहर्ष कवि रचित।

कवित्त।

धर्म कर्म पंज जस ओजस सुपंख मंजु उदर सुहाया कंठ शीलता विलास में। उत्तम विचार चंचु नागरी प्रचार वैन सता-सत नैन सुविवेक बुद्धिरास में। कहै शिवहर्ष त्यों सुजानता शिखा है, हाय नीलकंठ साहबप्रसाद गुण खास में। खड्गविलास निज वास ते निकासि हाय दीनो है निवास काल व्याध स्वर्ग-वास में॥ १॥

शीत दुग्धवट को सुवातहि मिलाय तैल पित्त अग्नितापते तपाय कर खास में। कीलिक ज्वरन तार मार दै कियो तयार खासा सन्निपात चोंगा भयी मृत्यु पास में। कहै शिवहर्ष चोंचा शूल को बनाय हाय लक्ष्य करी साहबप्रसाद मोर तास में। खड्गविलास निज बास ते सुफांसि करि दीनो है निवास काल व्याध स्वर्गबास में॥ २॥

जैसे कछु बेत रहे काम को कड़ाई साथ तैसन सफाई देत

वेतन हिसाब हैं । वत्त ते न वत्त भये प्रथम सुडांटि पति फेर समुझाय, कै छुड़ाय देत दाव हैं ॥ कारज परे पै देत वरज जु कोऊ ताको देखि कै गरज देत कुटी रहि जाव हैं। स्वर्ग को पधारे बाबू साहबप्रसाद हाय प्रेसकर्मचारियों को दै के शोक-ताव हैं ॥ ३ ॥

उठत सुप्रातकाल आपिस खुलाय करि सबै कारखाना को करावै स्वच्छतर है । जाकै जौन लायक सुकाम एकाएक देत टाइप मिलायप सुप्रूफ सुधकार है ॥ पेंच को चलाइबो सुरोस-नाई लाइबो त्यों कागद छटाइबो बनाइबो सुधर है । प्रेसकर्म-चारी ये अंदेश ते भाखत सब राखत सुनायब बिना को काम घर है ॥ ४ ॥

—०—

बाबू ब्रजनन्दन सहाय वकील आरा कृत।

हाय ! अचानक दुसह दुःख यह कित सों आयो ।
सुनतहि जेहि तन थरथराय हियरा घबरायो ॥
घहरैब कित सों कालवज्र औचक इत आई ।
"खड्गविलास" हुलास नसायो दै दुख भाई ॥ १ ॥

परकाशक "साहिबप्रसाद सिंह" चतुर मनेजर ।
कहाँ गये तजि प्रेस आज सब ही जर जर कर ॥
"काव्यकला" कर सुवर छटा जिन अमल प्रकासेव ।
"पोठीनार मानस" महान रचि कविन हुलासेव ॥ २ ॥

विविध ग्रन्थ मुद्रित, प्रकास करि गद्य पद्य को ।
भरि दीनो भंडार, काव्यभाषा को सद्य को ॥

श्रीयुत बाबू रामदीन सिंह जगत उजागर।
जिहि दुख दियो अपार, डुबायो सोकहिं सागर ॥ ३ ॥

कहि नहिं सकौं "सुजान! अश्रु जलपात न कीजे।
काल कर्म गति अटल जानि हिय धीरज दीजे"॥
नहिं कहि जात "सुरोइ २ हिय कसक निकारत।
रोअन सों दुख घटत, हाय जिय नेक न हारत"॥ ४ ॥

सोकहि को जग अचल अमल है, सब यह जानत।
मौन साधि सोइ करत पूज्यवर जो वह ठानत॥
मेरो पावर काकु बसाव नहिं या मों दरसो।
आपनि दसा निहारि नीर नित नैनन बरसो॥ ५ ॥

करत मीच जो न्याय, हाय जग जुलम कहा है।
उचित दण्ड की मिले सोक रोदन विरथा है।
प्रभु! यह भेद अथाह, थाह नहिं वेदहु पावैं।
भ्रमत २ थकि जाय, हाय कोउ पार न जावैं॥ ६ ॥

बिथाकथा कस कहै लेखनी गिरा न पावै।
जड़ अच्छर नहिं लखै भाव जियरा जो आवै॥
याते "व्रज" अकुलाय ईश पहं बिनती ठानै।
सान्ति आतमा लहै, सोक चिन्ता मति जानै॥ ७ ॥

सुख सों सुरपुर बास करैं श्रीब्रह्मसभा में।
उत्तम पद को लहैं, सबोहत सुर, कवि, मुनि जी॥
जग को दुख, सुख, सीत, घाम नहिं तुम्हें सतैहैं।
सदा सुरति करि तुमरि, मीत तुव विपदा पैहैं॥ ८॥

जनकपुर निवासी

श्री परमहंस वैदेहीशरण कृत।

हाय! अम्बिकादत्त शोक महिं जब लौ पर्यो पुकानो।
तब लौं दूसर बज्र आय के यह चितमें घहरानो॥
हा! साहिब परसाद सिंह जू! सज्जन जगत उजागर।
हा छत्रिय संतान! बीर अब कहां गये गुनसागर॥

दोहा।

हा साहिब परसाद हरि, आंख मूंदि कै आज।
तजि दीन्हे साहित्य को, नहिं कीन्हेउ भलकाज॥
हिन्दी हिन्दू हिन्द को, बहु सेवा तैं कीन्ह।
अब सांचे तेहि प्रेम को, केहि ताखे धरि दीन्ह॥
विजयरामशरण सिंह को, नेह नात को तोर।
धारन कीनो मौन ब्रत, करि कै हृदय कठोर॥
गो आदिक कै दानकरि, कंठी तिलक लगाय।
राम नाम सिर धारि कै, हरिपुर गे हरखाय॥
संवत वसुसरअंकससि *, सावन मास मलीन।
तिथि पूनो गुरुवार को, यह दारुन दुख दीन॥
बिना चित्त एकाग्र कै, नहिं होवत कछु काज।
तातें ही चिंता रहित, आसन लीन्हे आज॥
अब हिन्दी उद्धार को, करिहै कौन बिचार।
मौन होय नहिं बैठिये, हे, राजकुमार! ॥

---

* संवत १९५८